



कृष्णन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्रधर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अक्टूबर 2016

मूल्य 15 रु.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

आत्मशुद्धि आश्रम का 50वां वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस सम्पन्न



आश्रम के 50वें वार्षिकोत्सव एवम् स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री कैप्टन रूद्रसेन जी सिन्धु, वित्त मंत्री, कैप्टन अभिमन्यु के बड़े भ्राता परममित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक के अध्यक्ष की स्मृति चिन्ह एवम् शाल और साहित्य से सम्मानित करते हुए दाएं से स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, वा. विश्वमुनि जी, आचार्य चांद सिंह जी, श्री अशोक जून जी एवम् लाला चतुर्भुज जी बंसल

आश्रम के 50वें वार्षिकोत्सव एवम् स्थापना दिवस समारोह के विशिष्ट अतिथि माननीय श्री रवि कुमार जी आर्य अंजनि एसोसिएट की स्मृति चिन्ह एवम् शाल और साहित्य से सम्मानित करते हुए दाएं से स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, कैप्टन रूद्रसेन जी, वा. ईशमुनि जी, आचार्य चांद सिंह जी एवम् लाला चतुर्भुज जी बंसल



((विवरण कवर पृष्ठ 4 पर))

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज



आमन्त्रण पत्र



राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक, वेद, यज्ञ, योग-साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्याधिष्ठाता पूज्यपाद

स्वामी धर्ममुनि जी महाराज दुग्धाहारी के 81वें जन्मदिवस

दिनांक रविवार 20 नवम्बर 2016 के शुभावसर पर

निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर प्रातः 9.00 बजे से 1.00 बजे तक एवम्

बृहद यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन मध्याह्नोपरान्त 2.30 बजे से 7.00 बजे तक तत्पश्चात् ऋषिभोज
निवेदक: सर्व सदस्यगण आत्मशुद्धि आश्रम (पं. न्यास), बहादुरगढ़-झज्जर (हरियाणा)



आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें



श्री पूर्ण सिंह जी देशवाल
झज्जर, हरियाणा



श्री प्रकाश वीर जी आर्य
झज्जर, हरियाणा

933



श्री सौरभ कुमार जी
सुपुत्र श्री जगवीर सिंह जी
सैक्टर-2, बहादुरगढ़

प्रिय बन्धुओं! मास अक्टूबर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर
आगामी नवम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन
है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या
IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका
आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक



॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

आश्विन-कार्तिक

सम्वत् 2073

अक्टूबर 2016

सृष्टि सं. 1972949117

दयानन्दाब्द 193

वर्ष-15) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-10
(वर्ष 46 अंक 10)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507



सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)



परामर्श दाता: गजानन्द आर्य



कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)



उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुरमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)



व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी



सदस्यता शुल्क

संरक्षक : 7100 रुपये
आजीवन : 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक : 700 रुपये
वार्षिक : 150 रुपये
एक प्रति : 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ .

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार	4
सोम प्रभु की महिमा	6
धन्यवाद	7
क्या मनुष्य जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक सुख....	8
महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है	10
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	12
योग साधना है गृहस्थ जीवन	18
पान मसाला-मौत मसाला	23
गठिये से राहत दिलाये गिलोय	24
पहला सुख निरोगी काया	25
माता-पिता बच्चों को सदा उत्तम शिक्षा दें	26
हंसो और हंसाओ	28
क्षमा दान	28
मोतियों की लड़ी	29
चादर छोटी, पाँव लम्बे	29
भजन/इसी को ही जीवन कहते हैं	30
काल या समय की गणना की एक इकाई का नाम...	31
दान सूची	33

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

आत्मशुद्धि आश्रम का 50वां आश्रम स्थापना दिवस समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न

सोमवार दिनांक 26 सितम्बर से रविवार 2 अक्टूबर 2016 तक स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में अथर्ववेदीय बृहदयज्ञ योग साधना शिविर तथा सम्मेलनों के साथ आश्रम स्थापना दिवस समारोह उत्साह और हर्ष के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर अनेक संन्यासी विद्वान् भजनोपदेशक दानी एवं सामाजिक कार्यकर्ता पधारे।

ध्यान योग साधना शिविर- 26 सितम्बर से प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी द्वारा योग साधना का अभ्यास कराया गया एवं आसनों का प्रशिक्षण दिया गया।

अथर्ववेद बृहदयज्ञ- 26 सितम्बर से प्रातः 8 से 11 बजे सायं 3 बजे से 6 बजे श्री आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ चलता रहा। वेदपाठ श्री ध्रुवशास्त्री स्नातक गुरुकुल झज्जर भजनों का कार्यक्रम श्री हरीश मुनि जी, श्री विश्वमुनि जी ब्र. ध्रुव शास्त्री आदि के द्वारा भजनों का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा। मध्य-मध्य में भिन्न-भिन्न विद्वानों के प्रवचन होते रहे, श्री स्वामी रामानन्द जी, आचार्य खुशीराम जी, श्री आचार्य शिव नारायण जी, आचार्य चांद सिंह जी, आचार्य रवि शास्त्री जी, श्री ज्ञान चन्द शास्त्री जी, आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री आदि प्रतिदिन दोनों समय दिल्ली गुड़गांव बहादुरगढ़ आदि अनेकों स्थानों से यजमान प्रधार करके यज्ञ की शोभा बढ़ाते रहे।

आर्य महिला सम्मेलन- 30 सितम्बर सायं 3 बजे यज्ञोपरान्त आर्य महिला सम्मेलन कन्या गुरुकुल सिद्धीपुर लोवां की उपआचार्या मूर्ति देवी आर्या की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती मनीषा शर्मा एस.डी.एम. बहादुरगढ़ आश्रम के बच्चों द्वारा स्वागत गीत गाकर किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सुमन देवी अहलावत, श्रीमती सुदेश सन्दुजा, श्रीमती सुमन वर्मा, श्रीमती शुभा महेन्दु कन्या गुरुकुल की बालिकाओं और श्रीमती कल्याणी देवी आर्या हिसार आदि का भजनों प्रवचनों का

कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। महिला जागृति सम्मेलन की मुख्य अतिथि एस.डी.एम. मनीषा शर्मा ने महिलाओं को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के लिए जागरूक किया और लोगों को भ्रूण हत्या रोकने के लिए आह्वान किया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम और आश्रम सदस्यों द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। महिला सम्मेलन की संयोजिका श्रीमती रूक्मेश आर्या सैक्टर-6, बहादुरगढ़ ने सभी का धन्यवाद किया। श्रीमती सुदेश कालड़ा मन्त्रीणी स्त्री, आर्य समाज पश्चिम विहार, दिल्ली द्वारा कुशलता पूर्वक मंच संचालन किया गया। अन्त में स्वामी धर्ममुनि ने सभी को आशीर्वाद दिया। सभी के लिए भोजन की व्यवस्था श्रीमती सुमन अहलावत द्वारा की गई।

योग सम्मेलन- 1 अक्टूबर प्रातः 10 बजे स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य और आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी की अध्यक्षता में योग सम्मेलन चला। ब्र. ध्रुवशास्त्री, वा. विश्वमुनि, वा. हरिश मुनि, श्री रामदेव जी और आश्रम के विद्यार्थियों के भजनों का कार्यक्रम अति शोभायमान रहा। श्री स्वामी रामानन्दजी, वा. ईशमुनि जी, आचार्य चांद सिंह जी, श्री रवि शास्त्री योग पर प्रभावशाली प्रवचन रहे, 80 वर्षीय रतीराम जी साहब फर्रूखनगर आश्रम के आसनों का परदर्शन अत्यन्त आकर्षक रहा। अन्त में आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी का अध्यक्षीय भाषण प्रेरणादायक रहा। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा सभी का धन्यवाद करते हुए आशीर्वाद दिया। मंच का संचालन कुशलतापूर्वक श्री राजवीर जी आर्य द्वारा किया गया।

चरित्र निर्माण सम्मेलन- 1 अक्टूबर सायं काल 4 बजे चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन श्री आचार्य अनिल जी शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भजनों का कार्यक्रम, वा. मनुदेव जी वा. विश्वमुनि जी, ब्र.ध्रुव शास्त्री आदि के भजनों का कार्यक्रम सुन्दर रहा। श्री सत्यपाल जी वत्सार्थ श्री आचार्य शिवनारायण जी, श्री चन्द्रशेखर जी शास्त्री धर्माचार्य, विकासपुरी

दिल्ली चरित्र निर्माण पर प्रभावशाली उपदेश रहा। अन्त में अनिल जी का अध्यक्षीय भाषण स्वामी धर्ममुनि जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आचार्य चांद सिंह द्वारा कुशलता पूर्वक मंच संचालक किया गया।

आश्रम स्थापना दिवस समारोह- 2 अक्टूबर 2016 को प्रातः साधना शिविर के समापन के पश्चात् 8 बजे दो यज्ञ कुण्डों में आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी ने यज्ञ की पूर्ण आहुति करायी। श्री धर्मदेव जी खुराना श्रीमती सुनीता खुराना, श्री अमीत जी, श्रीमती चारू, श्री सुमीत खुराना परिवार रोहिणी दिल्ली से श्री अम्बरीश जी झाम, श्री सत्यप्रकाश जी वशिष्ठ, श्रीमती शीला वशिष्ठ, श्री प्रिय रत्न जी गुप्ता, सपत्नीक ने यजमान आसनों को शुशोभित किया। इस अवसर पर श्री अम्बरीश जी झाम एवं श्री सत्यप्रकाश जी वशिष्ठ के जन्म दिवसों के शुभ अवसर पर विशेष आहुतियां प्रदान की गईं। 10 बजे से आश्रम स्थापना समारोह आरम्भ अध्यक्षता श्री लक्ष्मण जी पाहुजा प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव, मुख्य अतिथि वित्त मन्त्री कैप्टन अभिमन्यु के बड़े भ्राता कैप्टन रूद्रसेन जी सिन्धु पुरम मित्र मानव निर्माण संस्थान के अध्यक्ष मुख्य अतिथि रहे। विशिष्ट अतिथि श्री रवि कुमार आर्य अंजलि प्रोपर्टीज बहादुरगढ़ रहे। श्री ध्रुव शास्त्री, पं. जय भगवान जी झज्जर, श्री भगवान दास जी, कन्या गुरुकुल की छात्राओं और आश्रम के बच्चों का स्वागत

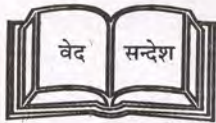
गीत और भजनों का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा। आश्रम के बालक नरेन्द्र ने ओजस्वी भाषण देकर सबको उत्साहित किया। श्री प्रभुदयाल चुटानी महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव, श्री डॉ. अनिल आर्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली, आचार्य शिवनारायण जी, श्री चांद सिंह जी आर्य आदि के प्रभावशाली प्रवचन हुए। इस शुभअवसर पर मुख्य अतिथि कैप्टन रूद्रसेन जी ने एक लाख पांच हजार एक सौ की धनराशि भेंट की। उन्होंने बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निखारने के लिए नैतिक शिक्षा देने पर जोर दिया।

विशेष आकर्षण-आश्रम के बच्चों का आसनों और विविध स्तुपों द्वारा प्रदर्शन अत्यन्त आकर्षक रहा। सभी ने तालियां बजाकर उत्साहित किया। अन्त में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद करते हुए 20 नवम्बर स्वास्थ्य जांच शिविर एवं भजन संध्या में पधारने के लिए आमन्त्रित किया। 1 बजे शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री राजवीर जी आर्य ने कुशलता पूर्वक मंच का संचालन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री, ब्र. कर्ण आर्य ने आश्रम ब्रह्मचारियों के सहयोग से सुन्दर व्यवस्था की। स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लेकर सभी अपने अपने स्थानों को प्रस्थान किया।

अखेराम सरदारो देवी आश्रम का मासिक सत्संग सम्पन्न

रविवार 11 सितम्बर 2016 को अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुडगांव का मासिक सत्संग सम्पन्न हुआ। प्रातः काल 8.30 बजे से आचार्य, प्रवीण शास्त्री ने यज्ञ कराया और यज्ञोपरांत 2 मधुर भजन सुनाये जिन्हें सभी ने पसन्द किया। तदपश्चात् श्री जयनारायण वकील व सुनील जी ने मांसाहार से हानियां व गौवंश की रक्षा के उपायों पर प्रकाश डाला। वा. ईशमुनि ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री रामदेव आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ व वा. हरिश मुनि जी ने मधुर भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। योगाचार्य श्री रतीराम व ब्र. विपिन आदि ने उत्तम स्तर के योगासन करके दिखाये जिन्हें देखकर सभी

आश्चर्यचकित हो गये। महंत सुभाष गिरी ने भी गाय व स्वास्थ्य पर प्रकाश डाला। श्री चांद सिंह आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आप आर्यों ने जो मुझ पर विश्वास और जिम्मेवारी डाली है मैं उस पर खरा उतरने का प्रयास करूंगा। आचार्य रवि शास्त्री के अध्यात्मिक प्रवचन की सभी ने प्रशंसा की। सत्संग अंत में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी का धन्यवाद किया और दोनों आश्रमों के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। 2 अक्टूबर को स्थापना दिवस पर सभी को आमन्त्रित भी किया। संयोजन का कार्य श्री राजवीर जी आर्य ने किया। उत्तम भोजन की व्यवस्था बहन रामदुलारी आर्या की तरफ से की गई थी। शान्ति पाठ के पश्चात् सत्संग सम्पन्न हुआ।



सोम प्रभु की महिमा

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

त्वं सोम ऋतुभिः सुक्रतुर्भूः,
त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा,
द्युम्नेभिर् द्युम्यभवो नृचक्षाः॥

ऋग् 1.61.2

ऋषिः गोतमः राहूगणः। देवता सोमः। छन्दः पङ्क्तिः।

(सोम) हे जगदुत्पादक तथा शुभगुणप्रेरक परमात्मन्। (त्वं) तू (ऋतुभिः) प्रज्ञाओं और कर्मों से (सुक्रतुः) सुप्रज्ञ और सुकर्मा (भूः) हुआ है। (विश्ववेदाः) सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ (त्वं) तू (दक्षैः) दक्षताओं एवं बलों से (सुदक्षः) सुदक्षः (हुआ है) (त्वं तू) (वृषत्वेभिः) विद्या, सुख, धन आदि की वर्षाओं से (तथा) (महित्वा) महिमा से (वृषा) वर्षक तथा महान (हुआ है) (और) (नृचक्षाः) मनुष्यद्रष्टा (तू) (द्युम्नेभिः) तेजो, यशों, अन्नों, और धनों से (द्युम्नी) तेजस्वी, यशस्वी, अन्नवान और धनी (हुआ है)।

हे सोम! हे जगत् के रचयिता तथा हृदय में शुभ गुणों की प्रेरणा करनेवाले परमात्मन्। मैं जब कभी तुम्हारे स्वरूप पर दृष्टिपात करता हूँ, तब मुग्ध हो जाता हूँ। तुम्हारे अन्दर जैसे अद्भुत गुण-कर्मों का सम्मेलन और सामंजस्य है, उसे देख श्रद्धा से तुम्हारे प्रति मेरा मस्तक नत हो जाता है। तुम 'विश्ववेदाः' हो, विश्वव्यापक और विश्ववित्तु हो, विश्व के कण-कण में विद्यमान रहते हुए विश्व के प्रत्येक घटनाचक्र को जाननेवाले हो। तुम 'नृचक्षाः' हो, प्रत्येक मनुष्य के द्रष्टा हो। ज्यों ही मनुष्य अपने मन में अच्छा या बुरा कोई विचार लाता है अथवा अच्छा या बुरा कोई कर्म करता है, त्यों ही तुम उसे जान लेते हो। तुम अपने ऋतुओं के कारण 'सुक्रतु' कहलाते हो। 'ऋतु' शब्द से सूचित होनेवाले ज्ञान और कर्म तुम्हारे अन्दर आदर्श रूप में विद्यमान हैं। तुम्हारे

ज्ञान और कर्म दोनों ही सत्य, शिव और सुन्दर हैं। चारों वेद तुम्हारे अगाध और शुभ ज्ञान के साक्षी हैं और यह सकल ब्रह्माण्ड तुम्हारे व्यवस्थित शुभ कर्म का साक्षी है। तुम दक्षताओं एवं बलों से 'सुदक्ष' हो। तुम्हारी दक्षता, तुम्हारा शिल्प-कौशल, तुम्हारा कला-चातुर्य जगत् की एक-एक वस्तु में, तरु-वल्लरियों में, फूल-पत्तियों में, भूमि आकाश में, चाँद-सितारों में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। तुम्हारा बल, तुम्हारे अपार सामर्थ्य का तब पता लगता है जब तुम प्राणियों को किसी ऐसी भयंकर विपत्ति से बचा लेते हो जिसके प्रतिकार के लिए वे स्वयं बेबस होते हैं, या किन्हीं दुर्जनों को उनके द्वारा किये जानेवाले सम्पूर्ण रक्षा-प्रयासों को विफल करके तुम काल का ग्रास बना देते हो।

हे सोम प्रभु! तुम अपने द्वारा हमारे ऊपर निरन्तर की जानेवाली वर्षाओं से 'वृषा' या वर्षक बने हुए हो। तुम हमारे ऊपर जल, विद्या, धन, सुख, विनय, सत्य, न्याय, दया, रक्षा आदि की सतत वृष्टि करते रहते हो, जिससे हम परिपुष्ट होते हैं। हे प्रभु! तुम 'द्युम्नी' से 'द्युम्नी' बने हुए हो। तेज, यश, धन, अन्न आदि प्रशस्त द्युम्न के तुम धनी हो, अतएव प्रशस्य और द्युम्न के तुम धनी हो, अतएव, प्रशस्य और वन्दनीय हो।

- वेदमञ्जरी

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

सम्पादकीय

धन्यवाद

मान्यवर बन्धुओं! मैं अस्वस्थ रहा, कार्यक्रम मध्य यज्ञ वेदि पर बैठने में अस्मर्थ रहा फिर भी परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 50वें स्थापना दिवस के आयोजन को देखकर आश्रम हितैषी माताओं तथा बन्धुओं ने भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा कि स्थापना समारोह प्रत्येक प्रकार से सफल रहा है, दूरभाष द्वारा भी यही शब्द हितैषियों के सुनने को मिले। एतद् विषय में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि सफलता शब्द में एक ऐसा जादू है सफलता शब्द सुनते ही हृदय में उमंग, उत्साह और प्रफुल्लता का आविर्भाव होता है। प्रत्येक मनुष्य अपने द्वारा किये जा रहे कार्यों को चरम सीमा तक पहुंचा हुआ देखना चाहता है, जिसे प्राप्त करना जीवन का अन्तिम लक्ष्य मान बैठता है, किन्तु यदि उस लक्ष्य को पाने में असफल हो जाए तो निराशा और कुण्ठा से भर जाता है, रोने-चिल्लाने लगता है, मनुष्य इतना टूट जाता है कि केवल मृत्यु के अतिरिक्त उसे कोई मार्ग दिखाई नहीं देता।

प्रिय पाठकों! यह एक शाश्वत सत्य भी है कि गहन अन्धकार में ही प्रकाश छुपा रहता है। असफलता में ही सफलता निहित है, केवल एक प्रयास में सफलता न मिले तो हताश व निराशा होकर हाथ में लिये हुये कार्य को छोड़ देना ठीक नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति संस्था को तीन कालों में से गुजरना पड़ता है—उपहास काल, विरोध काल पश्चात् समर्थनकाल आता है, आप कार्य आरम्भ करें तब आपका उपहास मजाक भी किया जायेगा। विरोध भी अत्यधिक होगा यदि आप धैर्यपूर्वक निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे तब समर्थन भी अवश्य मिलेगा। हमें वह दिन भी याद हैं, उपदेशक बुला लिये गये, शामयाना लगा दिया गया, मंच सजा दिया गया, श्रोता एक भी नहीं आया जो आया वह भी खाली पंडाल देखकर लौट गया, परन्तु हम हताश व निराश नहीं हुये, हमें इस बात का ज्ञान था काली रात्रि के बाद सुनहरा प्रातः काल का समय अवश्य आयेगा, यश-अपयश, हानि-लाभ का चक्कर चलता रहता है, यदि दुःख न हो तो सुखों का अहसास कैसे हो? यदि असफलता न हो तो सफलता का आनन्द और हर्ष कैसे हो?

दुःख के पीछे सुख है पगले काहे को घबराया।

एक बात और कहना चाहता हूं, मनुष्य सामाजिक प्राणी है। प्रत्येक मनुष्य जीवन में स्वस्थ-सुखी रहना चाहता है और सफल होने की इच्छा रखता है इसके लिये अत्यन्त आवश्यक है कि आलस्य प्रमाद त्याग कर अपने कार्य में लगा रहना चाहिये, जो मनुष्य अपनी सहायता आप करते हैं, उन्हीं पर प्रभु की अनुकम्पा कृपा होती है, उसके सहयोग के लिए सभी तत्पर रहते हैं, परिश्रमी ही अपने जीवन में सफल होते हैं। साथ ही अपना कर्तव्य समझ कर्म करते रहने में ही कल्याण है, मान-अपमान का ध्यान न करते हुये यह भावना रखना प्रभु ने ही कर्म करने के लिए मुझे यह शरीर दिया है।

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सब तोय,
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोय॥

सफलता-असफलता आप सभी के प्यार स्नेह के आधार पर है, आपके सहयोग से ही सफलता मिलती है, सफलता का श्रेय धर्ममुनि को नहीं आप सभी हितैषियों को जाता है। आप अर्थ का सहयोग न दें और नहीं सुनने आयें तो सफलता कैसे मिलेगी, अतः वार्षिकोत्सव की सफलता के मूल स्रोत आप सभी दानी, वक्ता, श्रोता हैं आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं, धर्ममुनि का शरीर तो बस एक चौकीदार का पार्ट अदा कर रहा है। आपकी दी हुई सम्पत्ति का सदुपयोग करना हमारा धर्म कर्तव्य है। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद!

मान्यवर आश्रम के हितैषी सदस्यो! आगामी 2 अक्टूबर 2017 आपके आश्रम की स्वर्ण जयन्ती है, इस शुभअवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ और विविध आकर्षक आयोजन होने हैं। स्मारिका प्रकाशित की जाएगी। देखना यह है कि स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाने में हम कितने सफल होते हैं। मैं समझता हूं हम सभी अभी से मन बना लेगें तो अवश्य ही सफलता मिलेगी। स्वर्ण जयन्ती की सफलता के लिए आपके सुझाव प्राप्त होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः आपसे निवेदन है स्व-स्व सुझाव प्रेषित करने का कष्ट करें। पुनश्च धन्यवाद एवम् इन्हें भावनाओं के साथ—

मैं सबका हूं, सब मेरे हैं, सबकी सेवा मेरा धर्म।
जगती के गहरे घावों की मरहम पट्टी मेरा कर्म॥

— स्वामी धर्ममुनि

क्या मनुष्य जीवन का लक्ष्य केवल भौतिक सुख प्राप्त करना ही है?

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य जीवन का क्या लक्ष्य है? यदि आजकल के सम्पन्न लोगों के जीवन पर दृष्टि डालें तो लगता है कि उनके जीवन का लक्ष्य उचित व अनुचित तरीकों से धन कमाना और उसका अधिक से अधिक संचय कर सुख सुविधाओं की वस्तुओं को प्राप्त करना, देश विदेश की यात्रायें करना, घूमना-फिरना ही है। प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या यही सब कुछ मनुष्य जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य है? इस प्रश्न का उत्तर जानने से पूर्व मनुष्य जीवन पर भी दृष्टिपात करना उचित होगा। माता-पिता से जन्म लेकर शिशु रूप में मनुष्य इस संसार में आता है और शारीरिक वृद्धि को प्राप्त करते हुए शैशवावस्था से किशोर व युवा बनता है। आरम्भिक जीवन के कुछ वर्ष शिक्षा प्राप्ति में व्यतीत होते जहां मनुष्य को जीवन व संसार विषयक ज्ञान कराया जाता है। स्कूलों में पढ़ाया जाने वाला ज्ञान सांसारिक विषयों तक ही सीमित होता है। इसमें शरीर व संसार के बारे में ही विद्यार्थियों को बताया व समझाया जाता है। इस शिक्षा का परिणाम यह होता है कि मनुष्य नाना प्रकार के स्वास्थ्यवर्धक व स्वादिष्ट भोजन करने के साथ ही अल्प व अज्ञान के कारण मांस, अण्डे व अनेक अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करता है और धनोपार्जन कर सुख-सुविधाओं की वस्तुओं का संग्रह व संचय कर उनसे सुख भोगने को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य मान लेता है। युवावस्था के बाद वृद्धावस्था आती है और उसमें किसी रोग आदि से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इन लोगों को अपनी आत्मा व संसार को बनाने व चलाने वाली सत्ता के विषय में सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता। यदि मिले भी तो उसे बताने व समझाने वाले सच्चे ज्ञानी, विद्वान व मित्र उपलब्ध नहीं होते। धर्म व अपने मत के आचार्यों व लोगों का भय व अज्ञानता भी मन व मस्तिष्क पर सवार रहती है। कोई किसी को बताने का प्रयास भी करे तो यह दूसरे मत का व्यक्ति है, कहकर उसकी उपेक्षा कर दी जाती है। इस अविद्या के कारण आज सारा संसार, लगभग 99 प्रतिशत, अविद्या अर्थात् ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के यथार्थ ज्ञान व इसके

प्रयोजनों व होने वाले लाभों से अपरिचित, अनभिज्ञ व वंचित हैं। इसमें दोष किसका है, इस पर विचार करने पर हमें लगता है कि सभी मतों के आचार्यों व उनके अनुयायियों का जो सत्य की खोज में किंचित भी श्रम, पुरुषार्थ व तप नहीं करते हैं।

अब प्रश्न सामने आता है कि ईश्वर व जीवात्मा हैं भी या नहीं? ईश्वर है तो दिखाई क्यों नहीं देता? उसको कैसे जान सकते हैं? इसका उत्तर तो ज्ञानी लोग जो ईश्वर को यथार्थ रूप में जानते हैं यही देते हैं कि ईश्वर अभौतिक व अत्यन्त सूक्ष्म वा सर्वातिसूक्ष्म होने से हमारी आंख व चक्षु आदि इन्द्रियों से दिखाई नहीं देता। सभी मनुष्यों व प्राणियों के शरीरों में एक जीवात्मा होती है। अन्य मत के लोग जीवात्मा को Soul या रूह कहते हैं परन्तु इसको वेदों के ज्ञानियों के अतिरिक्त अन्य मनुष्य यथार्थ रूप में जानते नहीं हैं। कोई भी मनुष्य अल्पज्ञ व एकदेशी होने के कारण किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। उसे अपने से अधिक ज्ञानियों की आवश्यकता होती है। पूर्ण ज्ञानी केवल सर्वव्यापक व सर्वज्ञ परमात्मा ही है। ज्ञानी मनुष्यों को यह ज्ञान सदग्रन्थों के स्वाध्याय व चिन्तन-मनन आदि अनेक कार्य व तप करने से प्राप्त होता है। यह पूर्णतया सत्य है कि ईश्वर व जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान केवल वेदों व वैदिक साहित्य के अध्ययन, चिन्तन, मनन व ध्यान उपासना आदि साधनों को करके ही प्राप्त किया जा सकता है। संसार में जहां व जिस मत सम्प्रदाय में ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप का जितना भी ज्ञान है वह सब वहां सुदूर अतीत काल में वेदों से ही पहुंचा है। अतः सदज्ञान की प्राप्ति केवल वेदों के अध्ययन व उसके विद्वानों की संगति से ही हो सकती है। वेद ईश्वर व जीवात्मा को एक चेतन व सूक्ष्म सत्ता बताते हैं। ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है और जीवात्मा अल्पज्ञ, एकदेशी व ससीम है। यह जीव अणु परिमाण वाला है। ईश्वर व जीव अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देते। किसी भी वस्तु को उसके गुणों व लक्षणों को देखकर व अनुभव कर ही जाना जाता है। इसी प्रकार से उस वस्तु

का होना भी विज्ञान द्वारा सिद्ध माना जाता है। सृष्टि, प्राणियों व संसार में नाना प्रकार के असंख्य पदार्थों की उत्पत्ति व उपस्थिति को देखकर ईश्वर की सिद्धि होती है। इनका बनाने वाला व अस्तित्व में लाने वाला केवल व केवल एक ईश्वर ही है। इसी प्रकार मनुष्यों व सभी प्राणियों के शरीरों को चलाने वाला एक जीवात्मा होता है जो कि अनात्म व अचेतन शरीर से पूर्णतया पृथक् एक आत्म, चेतन पदार्थ व तत्व है। ईश्वर व आत्मा के स्वरूप को विस्तार से जानने के लिए वेदों सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया जा सकता है जहां इनका विशद यथार्थ वर्णन सुलभ होता है जिसे पढ़कर व जानकर पूरा सन्तोष जिज्ञासु व अध्येता को होता है। संक्षेप में इतना बता दें कि ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है। वह निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। ईश्वर ज्ञानस्वरूप, प्रकाशस्वरूप, सुखस्वरूप, कर्म-फल के बन्धों से पूर्णतया मुक्त, जन्म-मरण आदि से मुक्त, जीवात्माओं को उनके कर्मानुसार जन्म व मृत्यु प्रदान करने सहित उन्हें सुख व दुःख देने वाला है। ईश्वर जीवात्मा के भीतर भी व्यापक है और जीव ईश्वर से व्याप्य है। यही ईश्वर सभी मनुष्यों द्वारा उपासनीय है। जीवात्मा सत्य व चेतन सत्ता है। यह अनादि, अनुत्पन्न, अवनाशी, अमर, अल्पज्ञ, एकदेशी, अणु परिमाण, ससीम, जन्म-मरण के चक्र में आबद्ध, कर्मानुसार सुख व दुःखों का भोक्ता, कर्म करने में स्वतन्त्र व फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है। इन विषयों के अधिक ज्ञान के लिए सत्यार्थ प्रकाश, योग व सांख्य दर्शन सहित वेदोध्ययन की शरण लेनी चाहिये।

जीवात्मा व ईश्वर का स्वरूप जान लेने पर मनुष्य जीवन का मुख्य कर्तव्य ईश्वर प्राप्ति वा ईश्वर साक्षात्कार को जानकर उसकी उपासना से ईश्वर की निकटता प्राप्त करना है। ईश्वर की निकटता से दुर्गुण, दुर्व्यस्न और दुःखों की निवृत्ति व भक्त गुणों की प्राप्ति होती है। आत्मा का बल पड़ता है। निरन्तर लम्बी अवधि तक उपासना से ईश्वर का साक्षात्कार भी होता है जिससे वह जन्म व मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। जन्म व मृत्यु के बन्धनों से मुक्त होने सहित मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र मार्ग ईश्वर की उपासना व साक्षात्कार ही है। यह केवल वैदिक विधि से उपासना करने से

ही उपलब्ध होता है अन्यथा सम्भव नहीं है। सभी मनुष्यों के जीवन में सुख व दुःख दोनों ही होते हैं। मनुष्य दुःखों से बचना चाहता है परन्तु उसे दुःखों से बचने का स्थायी उपाय समझ में नहीं आता। संसार में दुःखों से स्थाई रूप से मुक्ति का साधन ईश्वर की यथार्थ उपासना के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। मत-मतान्तरों में जो पूजा पाठ-व भक्ति आदि की जाती है वह यथार्थ ईश्वर की यथार्थ उपासना नहीं है।

अतः जो लोग सारा जीवन स्कूली शिक्षा लेकर धनोपार्जन व नाना प्रकार के सुखों यथा स्वादिष्ट सामिष निरामिष भोजन, यात्रा व भ्रमण, सुख के साधनों की प्राप्ति, नाच, गाना आदि में ही व्यतीत करते हैं वह एकांगी जीवन जीते हैं जिससे दुःखों से स्थाई मुक्ति नहीं हो सकती। यह स्थिति ऐसे मनुष्यों की अज्ञानता व अविद्या को प्रकट करती है। उन्हें अपने नाना प्रकार के कृत्यों का क्या-क्या परिणाम हो सकता है, यह ज्ञान नहीं होता। यदा-कदा छोटा-बड़ा दान व कुछ परोपकार कर व अन्य कोई मजहबी कार्य करके वह स्वर्ग व ऐसे कल्पित सुखों की अपेक्षा रखते हैं। ऐसा सोचना व मानना कुछ ऐसा ही है जैसे 'खूब मालूम है जन्म की हकीकत लेकिन दिल बहलाने को गालिब ख्याल अच्छा है।' हमें अनुभव होता है कि आधुनिक जीवन पद्धति का एक मात्र लक्ष्य भौतिक सुखों की प्राप्ति है जो हमें यथार्थ आध्यात्मिक सुखपूर्ण जीवन से दूर ले जाती है। हम यदि उपेक्षा आध्यात्मिक जीवन पद्धति की उपेक्षा करेंगे तो परिणाम में हम इससे मिलने वाले लाभों से वंचित होंगे। सभी मनुष्य अपने-अपने कर्मों के प्रति उत्तरदायी है। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने के कारण से हमारे व सबके प्रत्येक कर्मों का साक्षी है। अतः कोई व्यक्ति कोई भी बुरा काम या पाप कर ईश्वर दण्ड से बच नहीं सकता। पुनर्जन्म भी अवश्यम्भावी है। अवशिष्ट कर्मों के फल अगले जन्म मनुष्य व निम्न पशु आदि योनियों में भोगने ही होंगे। ईश्वर ने हमें स्वतन्त्रता दी है हम चाहें प्रेय मार्ग को चुने जो कि प्रायः सभी कर रहे हैं या श्रेय मार्ग का चयन करें, जो मोक्ष व मुक्ति में ले जाता है तथा जिसे महर्षि दयानन्द व उनके कुछ अनुयायियों ने चुना था। विवेकपूर्ण मार्ग का चयन कर जीवन की उन्नति करना ही उचित है। इति।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,
फोन: 09412985121

महर्षि का वेद-भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

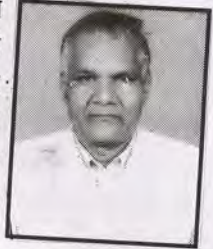
- खुशहाल चन्द्र आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित 'यजुर्वेद सन्देश' पुस्तिका से उद्धृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत् के एक ऊँच कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान हैं। सभी आर्य जन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में "आदर्श आर्य प्रवर" "शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी, उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था। जिसकी सभी लोगों ने प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उद्घाटन के समय डॉ. साहब मेरे गांव देवराला (हरियाणा) भी गये थे। मेरे परिवार के सभी लोगों से इनका मधुर सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक 'यजुर्वेद सन्देश' को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिलता है। इस पुस्तक को पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देवदयानन्द का वेद-भाष्य, अन्य भाष्य कारणों से कहीं अधिक सार्थक है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्मकाण्ड के ही ग्रन्थ मानते थे परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल धर्मकाण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव मात्र का बड़ा उपकार किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो यह लेख लिखा है, इसे पढ़कर मैं आशा करता हूँ कि सुधि पाठकगण वेदों को सही स्वरूप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इसी भाँति है:-

1. मध्यकालीन वेद भाष्यकार: मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत् 687 में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4-5 सूक्तों का आध्यात्मिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही 'उद्गीथ' हुए हैं,

उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवे सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त के 6 मन्त्र तक वेद भाष्य किया। यह भाष्य की कर्मकाण्ड परक ही हैं विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में वेंकट माधव ने ऋग्वेद का आध्यात्मिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255-1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल ने चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372-1442) के सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बाल विल्य सूक्तों को छोड़कर) आध्यात्मिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।



उब्बर (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् 1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गो मेध, अश्व मेधादि शब्दादि का अनर्थ करके पशुहिंसा जैसा जघन्य कृत्य यजुर्वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भास्कर ने वि. स. 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भारत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 वे लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं आध्यात्मिक परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आध्यात्मिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया।

अथर्ववेद का मध्य कालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र, तन्त्र,

जादू-टोना कृत्य अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु-हिंसा, मांस भक्षण, जादू-टोना, मारण-उच्चारण, अग्नि इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख ऐश्वर्यों का भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के पश्चात यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचार धरा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया। जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही है जो याज्ञिक कर्मकाण्ड करते हैं। इस प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिए ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रूचि हट गयी। वेद कथा, वेद प्रवचन, वेद प्रचारिदि के स्थान पर भागवत-गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि को कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वान:- आधुनिक युग (18वीं, 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ. एच.एच. विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादक का भी परिश्रम साध्यकार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान ग्रासमान ने सन् 1876-1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान ए. लुडविग, एच. ओल्डन वर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर.टी.एच. ग्रेफिश ने (सन् 1881-1898) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लंगाल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ नेतैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी अनुवाद किया। थियोडोर बेन्के ने (सन् 1848 में) सामवेद..... तथा अथर्व वेद (पैप्पलाद शाखा) का बलूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द: महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और द्वारा उपस्थित विध्व-बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे-बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में

एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट पत्थर फेंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगायी, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत किये परन्तु गुरु भक्ति एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया हुआ वचन उन्होंने अजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उर्वर और महीधर ने गोमेध अश्वमेध, नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22वें मन्त्र तक पशु को बांधना, देवता के लिए इसका वध करना, आहुति देना का भयानक चित्रण किया है, साथ ही यह प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गयी हिंसा, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में “पशु न पाहि” पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को “अघ्न्या” अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गौ मेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है। अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेदों के महत्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा। इस लेख को पढ़कर सुधि पाठकगण यह समझ गये होंगे कि मध्यकालीन वेद भाष्य कर्त्ताओं ने वेदों के अर्थ का अनर्थ करके वेदों में हिंसा तथा अनर्गल बातें बताकर वेदों को कितना बदनाम किया है, जिससे आप व्यक्ति वेदों में विश्वास व श्रद्धा न रखकर उनसे विमुख हो गये थे। देव दयानन्द ने वेदों के मन्त्रों का सही अर्थ लगाकर वेदों के प्रति लोगों में श्रद्धा उत्पन्न करके मानव मात्र का बड़ा हितव कल्याण किया है। ऐसे देव दयानन्द को “खुशहाल” नमन होकर श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

- C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स 180 महात्मा गांधी रोड, कोलकता-700007, मो. 22183825, 9830135794

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

—राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

हमने बाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त बहुत से लेखकों द्वारा लिखित रामायणों के विषय में बानगी दिखाई है। अगर 300 या 3000 रामायणों पर टिप्पणीयाँ लिखने का प्रयास करेंगे तो सर्वप्रथम तो यह असम्भव है और अगर कुछ प्रयास भी किया जाये तो कम से कम बीस वर्ष लगेंगे और परिणाम शून्य रहेगा। इसीलिए मणों पके हुए चावलों में से तोला भर चावल निकाल कर देखने जैसा कार्य हमने किया है। जिससे पाठक रामायण सम्बन्धी सत्य और असत्य को समझ सकेंगे। महाभारत काल के पश्चात जो गिरावट आई है उससे साहित्य, इतिहास, धार्मिक ग्रन्थ, वेद और अन्य कर्मकाण्ड सम्बन्धी बहुत सी भ्रामक बातें फैल गई। इन्हीं का लाभ उठाकर वाम मार्ग, कम्युनिज्म, मूर्तिपूजा, पाखण्ड, पारसी-मत, ईसाईमत, मुस्लिम और ना जाने कितने मत-मतान्तरों ने जन्म ले लिया। परिणामस्वरूप नैतिक मूल्यों का हास होने लगा और चमत्कार दिखाने वालों की बन पाई और वे व्यक्ति अपने आपको भगवान या भगवान का भेजा हुआ दूत सिद्ध करने में कामयाब हो गये और आज भी हो रहे हैं। 91 वर्ष पूर्व स्थापित हुए गीता प्रैस गोरखपुर ने भी लागत मूल्य पर लाखों रामचरितमानस बांट कर असली रामायण से हमें वंचित रखने में बहुत बड़ा कार्य किया है। आप यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि कुल 53 करोड़ से भी ज्यादा पुस्तकों का प्रकाशन यह प्रैस कर चुका है। जिसमें श्रीमद् भगवद्गीता की ही 7 करोड़ से भी अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हुई हैं। ठीक इसी तरह मैक्समूलर, विलसन, मेकडोनल आदि सभी का मुख्य उद्देश्य एक ही था जो मैक्समूलर के शब्दों में जो उसने अपनी पत्नी को 1866 ई. में लिखे पत्र में स्पष्ट किया था कि “मेरा वेदों का संस्करण तथा मेरा वेद भाष्य उत्तरकाल में भारत के भाग्य पर भारी प्रभाव डालेगा। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि मेरा यह कार्य भारतीयों की दीर्घकालीन आस्तिक भावना को निर्मूल कर देगा।” श्री राम और रामायण को असत्य व कल्पना की उड़ाने बताने

वाले देशी व विदेशी लेखकों व कवियों ने कोई कंसर नहीं छोड़ी लेकिन आज भी हमारा इतिहास हमारे ग्रंथ ध्रुव तारे की तरह अटल हैं जिन्हें कोई नहीं मिटा सकता।



हम अन्त में यही लिख रहे हैं कि रामायण का क्या महात्म्य है अर्थात् इसके स्वाध्याय व सत्य रामायण को सुनने से हमें क्या लाभ होगा? देखिये रामायण एक सामाजिक ग्रन्थ है। रामायण एक राजनिति, धर्मनिति तथा वेदानुकूल जीवन जीने की पद्धति है। हमें रामायण से निम्नलिखित शिक्षाएं प्राप्त होती हैं। जिन्हें अपने जीवन में धारण करने से ना केवल स्वयं का जीवनोत्थान होता है बल्कि सारा राष्ट्र सुदृढ़ व सशक्त बनता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसका तात्पर्य यही है कि समाज द्वारा स्थापित मर्यादाओं का पालन करने वाला श्रेष्ठ प्राणी है। यद्यपि समाज में स्थापित मर्यादायें समय-समय पर बदलती रहती हैं और देश-प्रदेश और विदेशों में भी अपनी-अपनी अलग-अलग मर्यादायें हैं। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि कौन-सी मर्यादायें? इस पर हमारा मानना है कि ऐसा विधि विधान जो वेद सम्मत कार्य करने की प्रेरणा देता हो, वेद अनुकूल जीवन जीने की प्रेरणा देता हो। उन्हीं मूल्यों को अपनाकर ही मनुष्य एक श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी बन सकता है। रामायण से हमें इस तरह की बहुत सी शिक्षाएं प्राप्त होती हैं जिनमें से मुख्य-मुख्य पर हम प्रकाश डाल रहे हैं।

माता-पिता का आज्ञाकारी होना:- राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाई अपने माता-पिता की आज्ञा को ईश्वर वाक्य की तरह पालन करते थे। जब राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ तो रत्ति भर भी उसने अपने पिता व सौतेली माता के प्रति अप्रसन्नता नहीं व्यक्त की। एक भी शब्द उसने माता कैकेयी के

विषय में नहीं कहा उल्टा भरत को समझाया कि तुझे मेरी शपथ है। तू माता कैकेयी के प्रति कोई विरुद्ध भावना नहीं रखेगा। जब राजा दशरथ राम को एक निति बताते हैं कि हे राम! तू मुझे युद्ध में जीत ले, हारा हुआ राजा कैसे अपना राजपाट किसी को दे सकता है तो उस समय राम कहते हैं कि “हे राजन्! तुम्हारी आयु लम्बी हो, तुम्हारे वचनों के पालन समान मैं अन्य कोई वस्तु नहीं देखता हूँ।” इसमें सबसे बड़ी बात तो यह है कि राजा दशरथ ने अपने मुख से कभी भी राम को वनवास जाने के लिए नहीं कहा। माता कैकेयी से वनगमन सम्बन्धी बात जानकर ही पिता की आज्ञा को शिरोधार्य किया। माता कौशल्या से आज्ञा नहीं मिलने पर बुद्धि से काम लिया और माता को पिता की दयनीय हालत का वास्ता देकर के मनाया, नहीं तो कौशल्या बिलख रही थी कि मैं भी तेरे साथ वन में जाऊँगी। जैसे गाय अपने बछड़े के पीछे जाती है और धन्य है राम की बुद्धि। उसी कौशल्या से कहलवा लिया कि हे मेरे पुत्र! मैं तेरी बुद्धि के आगे हार गई हूँ। वन से वापस लौटने पर ही तुझे देखूँगी और माता की आज्ञा लेकर ही राम वनवास गये। इसी तरह से चारों भाई अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते थे।

गुरुजनों व बड़ों का सम्मान करना:- अपने से बड़ों का सम्मान और गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना राम और उसके भाईयों से सीखें। जब वशिष्ठ जी युवराज पद के लिए कुछ दिशा-निर्देश देने राम के महल आये तो राम उनके आगमन की सूचना पाने पर दौड़े गये और कहा कि “हे गुरुवर, मुझे ही आज्ञा देते, आपने क्यों कष्ट किया” अर्थात् मैं ही उपस्थित हो जाता। लक्ष्मण अपने बड़े भाई राम की आज्ञा पिता

तुल्य समझ कर पालन करता था। भरत और शत्रुघ्न भी एक दूसरे की आज्ञा का पालन करते थे। ऋषि-मुनियों के सम्मान, रक्षा, सेवा, आज्ञा पालन और यहां तक कि अपने जीवन को भी बलिदान करने में एक पल भर के लिए भी नहीं सोचा जाता था। उदाहरण के लिए जब राम, लक्ष्मण और सीता दण्डक वन में प्रवेश करने लगे तो सीता ने डर कर कहा कि दण्डक वन में जाना ठीक नहीं। हमें यही रहकर धर्म की वृद्धि करनी चाहिए। उस समय तक राम को 10 वर्ष के लगभग चित्रकूट आदि स्थान पर विचरते हो गये थे। दण्डक वन से ऋषि-महर्षि व विद्वान पलायन कर रहे थे। रावण के सेनापतियों द्वारा उनको सताया व मारा जा रहा था। राम को सब हालात ज्ञात हो चुके थे और एक विशेष उद्देश्य को लेकर ही राम ने दण्डक वन में प्रवेश किया था। सीता के वचन सुनकर राम बोले “हे सीते! मैं इन ऋषि मुनियों का दुःख सहन नहीं कर सकता हूँ। इस समय चक्रवर्ती सम्राट के पद पर धर्मात्मा भरत शोभायमान हैं। इसीलिए उन्हीं की धर्मपूर्वक आज्ञा का पालन कर रहा हूँ और फिर तुझे मेरे और लक्ष्मण के होते हुए कोई भय नहीं करना चाहिए।”

तप और त्याग की शिक्षा:- राम आदि भाई एक महाराजा के बेटे थे। सीता, उर्मिला, माण्डवी व श्रुति भी राजा जनक व कुशध्वज की सुपुत्रियाँ थी। लेकिन तप और त्याग की साक्षात् मूर्ति थे वे सभी। जिस तरह से इतने बड़े राज्य को त्यागना और जिसे दिया गया उसने भी 14 वर्षों तक एक संन्यासी जैसा जीवन जीकर राज्य की व्यवस्था संभाली। सुमित्रा ने राम के साथ वन जाने की लक्ष्मण को ऐसे ही आज्ञा दे दी जैसे राम वन ना जाकर बारात में जा रहा हो। यही नहीं सुमित्रा ने लक्ष्मण को अपने बड़े भाई और भावज की आज्ञा पालन करने सम्बन्धी बहुत सी शिक्षायें भी प्रदान की। कौशल्या ने जरा भी रोष कैकेयी के प्रति नहीं प्रकट किया। भरत के मिलने पर जब माता कौशल्या रोने लगी तो वहां भरत ने कसमें खाई हैं जिन्हें सुनकर माता कौशल्या का हृदय फट पड़ा और भरत को छाती से लगाकर कहा कि “हे मेरे लाल राम को वनवास जाने में मैं तेरी कोई सहमति नहीं मानती हूँ।” इसीलिए तप और त्याग की शिक्षा हमें रामायण से मिलती है।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

आपस में भाईयों के प्रेम की शिक्षा:- रामायण का सबसे अच्छा भाग मुझे यही लगता है कि राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न इन चारों भाईयों में आपस में असीम प्यार था। चक्रवर्ती साम्राज्य को सारे भाई ऐसे ठुकरा रहे थे जैसे कोई मिट्टी का ढेला हो। जब भरत ने भाई के वनगमन की बात सुनी तो बेहोश होकर गिर पड़े। माँ कैकेयी को बुरा भला कहने लगे और कहा कि “हे माता! आज मैं अनाथ हो गया हूँ। मेरा पिता स्वर्ग चला गया और मेरा बड़ा भाई वन को चला गया लेकिन मैं तेरी यह कामना कभी नहीं पूरी होने दूंगा। मैं भी अपने भाई के पास वन में जाऊंगा। हे माता! इस जगत में तूने मेरी बड़ी निदा कराई है। लोग तो मुझे ही दोषी मानेंगे।”

जब लक्ष्मण मृत्यु के द्वार पर था तो राम ने अपना सारा ही उत्साह छोड़ दिया था कहता है कि “हे सुग्रीव, अब मुझे रावण मारने से क्या, मेरा धार्मिक भाई मेरे सामने प्राणों को छोड़ रहा है। मैं भी इसके साथ ही जाऊंगा। मैं माता सुमित्रा को क्या उत्तर दूंगा।” आज के युग में इस शिक्षा को ग्रहण करने का बड़ी आवश्यकता है। जब रावण को मारकर राम अयोध्या लौटते तो उन्होंने हनुमान को भरत के पास भेजा और कहा कि “हे हनुमान! तुम भरत से वार्तालाप करते समय यह अवश्य जानना कि चिरकाल तक राज्य करते-करते अगर उसका मन राज्य में रम गया है तो

बहुत अच्छा है, भरत राज्य करें, मैं वापिस वन को लौट जाऊंगा और तपस्वियों की तरह वहाँ पर रहूँगा।” लेकिन वहाँ तो नजारा ही दूसरा था। राम वापिस आ गया है, इस सुखद समाचार को सुनकर भरत बेहोश हो गया और फिर होश में आने पर हनुमान को गले से लगा लिया।

पति-पत्नी का प्रेम:- हमें रामायण से पति-पत्नी के प्रेम की शिक्षा भी मिलती है। राम और सीता का आपस में बहुत ही पवित्र भाव का प्रेम था। सीता हरण के पश्चात् जो महर्षि बाल्मीकि राम की पागलों जैसी अवस्था का वर्णन करते हैं, वह सिद्ध करता है कि राम सीता को किस तरह से चाहते थे। ठीक इसी तरह सीता भी राम के प्रति प्रेम रखती थी। रावण की कैद में एक क्षण भर के लिए भी उसने राम को नहीं भुलाया। मंदोदरी ने तो रावण को यहाँ तक कह दिया था कि “हे लंकेश्वर! तुम्हारा सारा साम्राज्य इस पतिव्रता सीता के आंसुओं में बह जायेगा।” हनुमान के अशोक वाटि में मिलने पर सीता हनुमान से यही प्रश्न करती है कि “हे वानर श्रेष्ठ राम मेरे बिना कैसे रहते हैं?” तब हनुमान ने भी राम द्वारा सीता को स्मरण करने की बात कही और कहा कि वे सोते हुए भी सीते कहकर उठ बैठते हैं।

- क्रमशः

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगावाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मुपुर रोड, फर्रुखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

योग साधना है गृहस्थ जीवन

-कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

आर्य-जीवन की आधारशिला चार आश्रम हैं। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीन आश्रम अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए किसी न किसी प्रकार से इस आश्रम पर निर्भर रहते हैं, इसलिए यह समस्त आश्रमों का आधार कहलाता है। विवाह के बाद स्त्री और पुरुष गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर एक नया घर बनाते हैं। नैतिक जीवन के जो संस्कार लोगों में बाल्यावस्था में पड़ते हैं उनका विकास गृहस्थ जीवन में होता है। इस आश्रम में प्रवेश करते ही दायित्वों का क्रम आरम्भ हो जाता है। इस जीवन में प्रवेश करने पर पति-पत्नी न केवल त्याग की आदत डालते हैं अपितु एक दूसरे का ध्यान रखना भी सीखते हैं। पहले तो केवल पुरुष का कर्तव्य था कि वह पूरे परिवार के भरण-पोषण के लिए पुरुषार्थ करते हुए जीवन यापन करे। आज आधुनिकता से भरे इस युग में इस दायित्व को पति व पत्नी दोनों समान रूप से मिलकर निभाते हैं। प्रायः यह सुना जाता है कि माता-पिता संतान का पालन पोषण इसलिए करते हैं कि वे बड़ा होकर उनकी सेवा करेंगे, परन्तु यह सोच सही नहीं है। संतान का पालन करना माता-पिता का दायित्व है। इसलिए इस दायित्व को निःस्वार्थ भावना के साथ निभाना ही श्रेयस्कर है। गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए धनार्जन अत्यंत आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक गृहस्थी का कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक पुरुषार्थ करते हुए धनार्जन करे, परन्तु इसमें इतना अधिक लिप्त न हो जाए कि उसके पास अन्य कार्यों के लिए समय न रहे। गृहस्थ के पांच महत्त्वपूर्ण कर्तव्य माने गए हैं। ये कर्तव्य पंच महायज्ञ के नाम से जाने जाते हैं। प्रत्येक गृहस्थ को ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्व देव यज्ञ अवश्य करने चाहिए।

अब हम विचार करते हैं कि गृहस्थ जीवन एक योग साधना क्यों है। योग का अर्थ है-मिलाना या जोड़ना। मनुष्य अपने आप में एक प्रकार से अपूर्ण होता है और इस अपूर्णता को मिटाने के लिए किसी दूसरी शक्ति से अपने को जोड़कर अपनी अपूर्णता को दूर करते हुए अधिक शक्ति संचय करता है। योग का

उद्देश्य भी एक प्रकार से यही है। अनेक प्रकार के योगों में गृहस्थ योग भी एक योग पद्धति है। प्राचीन काल में अधिकांश ऋषि गृहस्थ होते थे। वशिष्ठ के सौ पुत्र थे। अत्रि की पत्नी अनुसुइया और गौतम की पत्नी अहिल्या थी। महर्षि याज्ञवल्क्य की गार्गी और मैत्रेयी नाम की दो पत्नियां थी। गृहस्थ जीवन में रहते हुए ही उन्होंने न केवल तप करते हुए आत्मोन्नति की, अपितु निर्वार्ण की प्राप्ति की थी। योगीराज कृष्ण को हम सब भली भांति जानते हैं, जिन्होंने उत्तम कोटि की संतान की प्राप्ति के लिए अनेक वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए तप किया था। महर्षि मनु के अनुसार पुरुष अपनी पत्नी और संतान से मिलकर ही एक पूर्ण मनुष्य बनता है। कई लोगों की यह सोच है कि गृहस्थाश्रम में रहकर व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति नहीं कर सकता है। आत्मोन्नति करना अन्तःकरण को पवित्र करते हुए विवेक प्राप्त करना है, जिसका बाह्य संसार से अधिक सम्बन्ध नहीं है, अपितु यह आन्तरिक उन्नति है। जिस प्रकार ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी साधना के माध्यम से अपने लक्ष्य को पा सकते हैं, उसी प्रकार से गृहस्थ भी साधना के मार्ग पर आत्मोन्नति करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर की साधना में मनुष्य के जीवन का लक्ष्य परमेश्वर को पाना या मोक्ष प्राप्त करना है। गृहस्थ संचालन के सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण देखते जाते हैं। प्रथम में व्यक्ति, मैं और मेरा के अहंकार में लिप्त होकर स्वार्थ की भावना से वशीभूत रहता है, दूसरे में आत्मत्याग, सेवा, प्रेम और परमार्थ की भावना से जीवन निर्वाह किया जाता है। पहला दृष्टिकोण बंधन, पतन और पाप की ओर ले जाता है। दूसरा दृष्टिकोण मुक्ति, उत्थान, पुण्य और मोक्ष मार्ग की ओर ले जाने वाला होता है। अतः गृहस्थ जीवन में रहते ही व्यक्ति यदि अपना सही मार्ग चुनता है, तो वह एक प्रकार से योग की साधना करना ही कहलाएगा।

घर के प्रत्येक सदस्य को सद्गुणी, सदाचारी और धर्मपरायण बनकर जीवन यापन करना चाहिए। धर्मपूर्वक धन की प्राप्ति करते हुए ही जीवन निर्वाह करना उसके जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। जो मनुष्य घर में रहते

हुए ही एक योगी की भांति जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसको सदा ही यह विचार मन में बनाए रखना चाहिए कि वह एक योगी है और उसका जीवन साधनामय है। दूसरे क्या करते हैं और क्या सोचते हैं, इसकी उसे तनिक भी परवाह नहीं करनी चाहिए। उसे अपनी आनन्दमयी साधना को निरन्तर जारी रखना है, यह संकल्प सदा मन में दृढ़ बनाए रखना चाहिए। ऐसे साधक को सोने से पूर्व दिन भर के कार्यों पर विचार करते हुए आत्मावलोकन करना चाहिए। जैसे-आज मेरे व्यवहार में क्या भूलें हुई? क्या मैंने स्वार्थ से प्रेरित होकर कोई कार्य किया? क्या सभी कार्य एक अच्छे गृहस्थ की भांति किए गए? यदि इन प्रश्नों के उत्तर में कोई आपत्तिजनक बातें पाई गईं तो अगले दिन उन पर सुधार करना चाहिए। इस प्रकार आचरण करते हुए एक दिन आदर्श जीवन चर्या प्राप्त की जा सकती है। गृहस्थ योग साधक के मार्ग में नित नई कठिनाइयाँ आती रहती हैं। यदि कोई ऐसी घटना हो जाती है जो आदर्शों के प्रतिकूल हो तो अपने स्वभाव पर विजय पाते हुए, ऐसी घटना दोबारा न होने पाए, ऐसा संकल्प करना चाहिए।

गृहस्थ परिवार में रहते हुए ही स्वाध्याय के द्वारा उपासना के मार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है। शतपथकार के स्वाध्याय के लाभों का वर्णन करते हुए एक मन्त्र (11.5.7.1) में कहा है कि इससे व्यक्ति "युक्तमना भवति" अर्थात् समाहित मन वाला या स्थिरचित्त हो जात है। स्वाध्याय का दूसरा लाभ है कि वह, "अपराधीनो भवति" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति किसी की पराधीनता स्वीकार नहीं करता है। वह इन्द्रियों के रूप, रस, गन्ध आदि विषयों के वश में नहीं रहता है। तीसरा लाभ है-"अहरहरथान् साधयते" अर्थात् वह दिनों-दिन अर्थों की सिद्धि करता है। यहाँ शतपथकार का अर्थ से आशय शब्द के पीछे जो गहन अर्थ है, उसकी सिद्धि कर लेना है। चौथा लाभ है-"सुखं स्वापिति" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति चैन की नींद सोता है। पांचवा लाभ है-"परम चिकित्सक आत्मनो भवति" अर्थात् वह अपनी आत्मा का चिकित्सक हो जाता है, वह अपने मानसिक रोगादि विकारों की स्वयं चिकित्सा कर सकता है। छठा लाभ है-"इन्द्रियसंयमः भवति" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति इन्द्रिय संयमी हो जाता है। सातवां लाभ है-"एकरामता

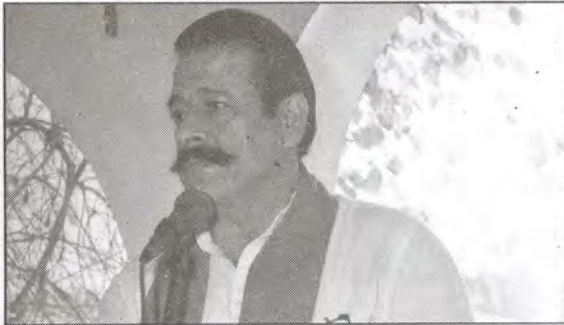
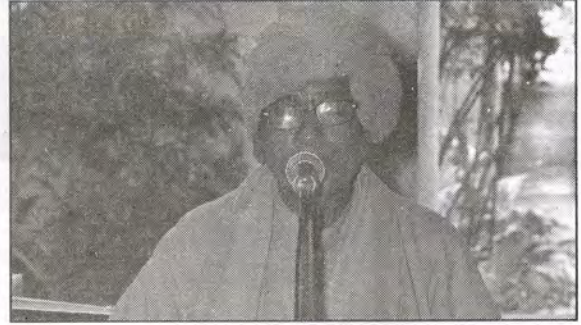
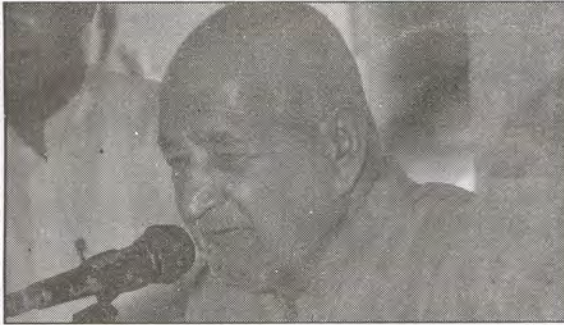
भवति" अर्थात् वह केवल एक तत्त्व परमात्मा से खेलता है। सांसारिक सभी खेलों से विमुख होकर केवल परमात्मा में ही आनन्द लेता है। आठवां लाभ है-"प्रज्ञावृद्धिर्भवति" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पण्डित बन जाता है। नवां लाभ है-"ब्राह्मण्यम्" अर्थात् उसमें ब्रह्ममण्यता आ जाती है। ब्रह्ममण्यता के आने से उसमें सभी प्राणियों के हित की कामना, सर्वदुःखानुभूति, संवेदनशीलता, परोपकारिता स्वार्थत्याग, परमतपस्विता आदि गुण स्वतः आ विराजते हैं। दसवां लाभ है-"प्रतिरूपचर्याम्" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति वह दर्पण है जिसमें हर सद्गुण की प्रतिकृति या छाया देख सकते हैं। ग्यारहवां लाभ है-"यशः" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति को यश की प्राप्ति होती है। बारहवां लाभ है-"लोकपक्ति" अर्थात् उसका लोक-परिपाक हो जाता है या उसे लोक सिद्धि प्राप्त हो जाती है। तेरहवां लाभ है-"अर्चा-बुद्धि" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति की अर्चना होती है। उसके प्रभाव से जनगण में विनय, श्रद्धा, नम्रता आदि गुण आ जाते हैं और सभी श्रद्धापूर्वक उसका आदर करते हैं। चौदहवां लाभ है-"दानशीलता" अर्थात् उसे दान और दक्षिणा की प्राप्ति होती है। पन्द्रहवां लाभ है-"अज्येयतया" अर्थात् स्वाध्याय-शीलता से व्यक्ति अज्येय हो जाता है। सोलहवां लाभ है-"अवध्यता" अर्थात् वह सभी के लिए अवध्य हो जाता है।

"अति ह वै पुनर्मृत्यु मुच्यते। गच्छति ब्रह्मणः सात्मताम्।" अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पुनर्मृत्यु से मुक्त हो जाता है। वह परमेश्वर के समान-परान्तकाल तक जन्म-मृत्यु बन्धन से छूट जाता है। इस प्रकार एक बार के प्रयत्न से यदि उसे ब्राह्मणत्व प्राप्त हो गया तो उसकी ब्राह्मणत्व मरता नहीं है और पुनर्जन्म प्राप्त करने पर वह, वहीं से कार्य आरम्भ कर देता है क्योंकि वह स्वाध्याय से ब्रह्म की सात्मता को प्राप्त कर लेता है अर्थात् वेद को आत्मसात कर लेता है, ब्रह्म (आनन्द) को आत्मसात कर लेता है। इसके लिए उपासना अत्यन्तावश्यक साधन है। यहाँ पर उपासना का क्या प्रयोजन है, यह जानना भी आवश्यक है।

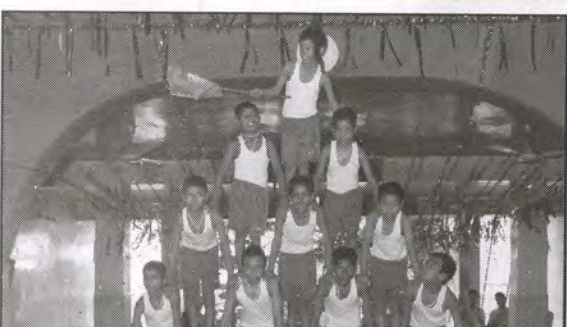
उपासना का सही प्रयोजन-

अब हम यह विचार करते हैं कि परमेश्वर की भक्ति और उपासना क्यों करनी चाहिए। वेद में प्रभु के (शेष पृष्ठ 21 पर)

आत्मशुद्धि आश्रम के 50वें स्थापना दिवस समारोह की सुन्दर झलकियां



आत्मशुद्धि आश्रम के 50वें स्थापना दिवस समारोह पर आश्रम के बच्चे आसनों, स्तूपों का प्रदर्शन करते हुए



आत्मशुद्धि आश्रम के 50वें स्थापना दिवस समारोह पर आश्रम के बच्चे आसनों, स्तूपों का प्रदर्शन करते हुए



आत्मशुद्धि आश्रम के 50वें स्थापना दिवस समारोह की सुन्दर झलकियां



(पृष्ठ 16 का शेष)

सम्बन्ध में स्तुति, प्रार्थना और उपासना विषयक अनेक मन्त्र हैं। इस प्रकार वैदिक-धर्म प्रभु भक्ति के उपदेशों से परिपूर्ण है। जैसा कि लेख के आरम्भ में उपासना का अर्थ स्पष्ट किया गया था, उपासना का शब्दार्थ है-समीप बैठना, संगति में बैठना। इसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप, उनकी संगति में बैठते हैं। आम साधक की दृष्टि से देखा जाए तो जो संगति का लाभ है, वही लाभ उपासना का है परन्तु महर्षि ने समस्त वैदिक साहित्य का मंथन कर मनुष्यों के लिए आवश्यक रूप से करणीय जो पंचमहायज्ञ बताए हैं, उनमें ब्रह्मयज्ञ जिसे संध्या भी कहा जाता है, उपासना हेतु महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। परमात्मा के गुणों का चिन्तन करते हुए उसमें ध्यान लगा कर समाधि की अवस्था तक पहुंचना ही उपासना का वास्तविक प्रयोजन है।

उपासना कैसे करें-

महर्षि द्वारा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में उपासना पद्धति-निम्न प्रकार बताई गई है-“ अब जिस रीति से उपासना करनी चाहिए, सो आगे लिखते हैं-जब-जब मनुष्य लोग ईश्वर की उपासना करना चाहें, तब-तब इच्छा के अनुकूल एकान्त स्थान में बैठकर, अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर करें। तथा सब इन्द्रिय और मन को सच्चिदानन्दादि लक्षण वाले अन्तर्यामी अर्थात् सब में व्यापक और न्यायकारी परमात्मा की ओर अच्छी प्रकार से लगाकर, सम्यक चिन्तन करके, उसमें अपने आत्मा को नियुक्त करें। फिर उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना को बारंबार करके अपने आत्मा को भली भाँति उसमें लगा दें।’ इसके बाद महर्षि ने पतंजलि मुनि के योगशास्त्र और उन सूत्रों पर वेदव्यास मुनि के भाष्य के प्रमाणों का उल्लेख किया है जो संक्षिप्त रूप से निम्न प्रकार हैं-

(1) चित्त की वृत्तियों को सब बुराइयों से हटा के शुभ गुणों में स्थिर करके मोक्ष को प्राप्त करने को ‘योग’ कहते हैं और ‘वियोग’ उसको कहते हैं कि परमेश्वर और उसकी आज्ञा से विरुद्ध बुराइयों में फँस के उससे दूर हो जाना।

(2) जैसे जल के प्रवाह को एक ओर से दृढ़ बांध से रोक देते हैं, तब वह जिस ओर नीचा होता है, उस ओर चल के वहीं स्थिर हो जाता है, इसी प्रकार मन की वृत्ति भी जब बाहर से रूकती है, तब परमेश्वर में स्थिर हो जाती है। एक तो चित्त की वृत्ति को रोकने

का यह प्रयोजन है।

(3) उपासक योगी और संसारी मनुष्य जब व्यवहार में प्रवृत्त होते हैं, तब योगी की वृत्ति तो सदा हर्षशोकरहित, आनन्द से प्रकाशित होकर उत्साह और आनन्दयुक्त रहती है और संसार के मनुष्य की वृत्ति सदा हर्षशोकरूप दुःखसागर में डूबी रहती है। उपासक योगी की तो ज्ञानरूप प्रकाश में सदा बढ़ती रहती है और संसारी मनुष्य की वृत्ति सदा अन्धकार में फँसती जाती है।

(4) सभी मनुष्यों में पांच प्रकार की वृत्तियाँ किष्ट और अकिष्ट भेद से होती हैं। ये वृत्तियाँ हैं-प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। इन वृत्तियों को अभ्यास और वैराग्य अर्थात् सब बुरे कामों और दोषों से अलग रहकर ही इन्हें रोक कर उपासना योग में प्रवृत्त हुआ जा सकता है।

ब्रह्मयज्ञ या संध्या नित्य सांय और प्रातः सभी श्रेष्ठ जनों द्वारा किया जाना आवश्यक है। इसमें भी केवल मन्त्र पाठ और अर्थ पर विचार तक ही सीमित न रहना चाहिए अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए उक्त योग मार्ग पर चलना भी अत्यन्त आवश्यक है। कुछ समय मौन रह कर आत्मा और परमात्मा के गुणों का चिन्तन करते हुए ध्यान लगा कर यदि सम्भव हो सके तो समाधि अवस्था तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। साधना के इस मार्ग पर चलने के लिए गृहस्थ को घर से बाहर अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है, अपितु घर के वातावरण को ही शुद्ध व पवित्र बनाते हुए उपरोक्त समस्त प्रक्रियाओं को पूर्ण किया जा सकता है। यह भी उल्लेखनीय है कि सामान्य साधकों के लिए बिना किसी गुरु का सानिध्य प्राप्त किए उपासना के इन कठिन मार्गों पर चलने में कठिनाइयाँ आ सकती हैं। इसके लिए समय-समय पर आर्यसमाज द्वारा संचालित कई संस्थानों और हिन्दू धर्म की अन्य संस्थाओं के द्वारा भी साधकों के मार्गदर्शन हेतु शिविर लगा कर प्रशिक्षण दिया जाता है। साधक इन स्थलों पर सप्ताह या उससे अधिक समय तक रहकर उपासना का सही तरीका अपना सकते हैं। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गृहस्थ में ही हम एक योगी की भाँति जीवन बिताते हुए मोक्ष मार्ग पर आरूढ़ हो सकते हैं।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुडगाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इन्स्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुडगाँव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भटेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओम्प्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुडगाँव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुडगाँव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, सालहावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुडगाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगाँव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा गुडगाँव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनिन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डेंट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ़
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुडगाँव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झा, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुडगाँव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
72. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

पान मसाला-मौत मसाला

- चांद सिंह आर्य

गुटका खाओ-गाल गलाओ,
जर्दा खाओ-जीभ जलाओ।

"Pan Masala attracts by its flavour and kills by its condiments. Mouth is ment for nourishment and not for punishment."

पान मसाला अपनी महक द्वारा मनुष्य को आकर्षित करता है और अपने विष के द्वारा मारता है। मुंह शरीर की सेवा करने के लिए है न की सजा देने के लिए।

1. "Pan Masala Death Masala.:" पान मसाला-मौत मसाला। क्योंकि पान-मसाला, सुपारी, जर्दा, तम्बाकू आदि के सेवन करने से होठ, गाल, दांत, गर्दन और फेफड़ों का कैंसर हो जाता है।
2. मुंह में छाले बनने लगते हैं, सम्पर्क भाग की म्यूकश ग्रन्थियों में सिकुड़न आ जाने के कारण कोई भी कड़ी वस्तु चबाने-खाने में दर्द होता है।
3. जबड़ों का खुलना निरन्तर घटता जाता है जो कि मुख-कैंसर के कारण होता है।
4. पान-मसालों व गुटकों इत्यादि में नाना प्रकार के मादक पदार्थ (यहाँ तक कि छिपकली भी) मिलाये जाते हैं।
5. इन पदार्थों में पाए जानेवाले विभिन्न विष ही मुँह के कैंसर के लिए पर्याप्त हैं।
6. ये पदार्थ मुँह, गले व भोजन की नली तथा पाचन संस्थान में पहुँचकर पतली तह के रूप में जम जाते हैं। ये धीरे-धीरे सूजन का रूप धारण कर आन्तरिक त्वचा पर जम जाते हैं जो आसानी से साफ नहीं होती! ये आँतों में भी जम जाते हैं और धीरे-धीरे कैंसर में बदल जाते हैं जिसकी परिणति भयानक मौत के रूप में होती है।
7. मुँह व गले में छाले, खाने में जलन यहाँ तक कि ताजे पानी से भी जलन, रक्तचाप बढ़ना, हृदयगति तेज होना, घबराहट, उल्टी, चक्कर आना, छातील का दर्द जैसी प्रारम्भिक शिकायतों का बाद में स्थायी बन जाना और फिर अन्तिम परिणाम-दर्दनाम मौत होता है।
8. मसूड़े जो दांतों की पकड़ मजबूत करने का काम करते हैं, वे कमजोर पड़ जाते हैं।

9. दांत पीले हो जाते हैं।

10. केवल इन पदार्थों के प्रयोग से ही प्रतिवर्ष लगभग 8 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है।

सावधान्! कहीं आप भी इनमें शामिल होने तो नहीं जा रहे?

ध्यान रहे-केवल प्रारम्भिक स्थिति में ही उपचार संभव है। एक इंजेक्शन का मूल्य 5000 रुपये से लेकर 35000/- रुपये तक है और यह भी आवश्यक नहीं कि उपचार के पश्चात ठीक हो ही जाए। उपचार में पूरे के पूरे घर बर्बाद हो जाते हैं। माँगने पर भी मौत नहीं मिलती है।

छोड़ने हेतु- इस व्यसन को छोड़ने हेतु मैं तो एक ही सुझाव देता हूँ कि आप अपने नजदीकी हस्तपाल के कैंसर वार्ड में जाकर उन मरीजों को देखें और मिलें जो अपनी जिन्दगी और मौत से लड़ रहे हैं। इनमें से आपको वे लोग भी मिलेंगे जिनके पास

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुएँ भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

धन-दौलत की कमी नहीं है और वे ठीक होने के लिए करोड़ों रुपये भी देने के लिए तैयार हैं, परन्तु हाय रे शौक! उनको मिलती है घुट-घुटकर मौत। अब आप स्वयं फैसला कीजिए कि आप सुख से जीना पसंद करेंगे या तड़प-तड़प कर मरना।

जरा सोचो- जिस पदार्थ का सेवन करने से शारीरिक, आत्मिक, आर्थिक व सामाजिक हर प्रकार की हानि ही हो उसे खाना-पीना कौन-सी बुद्धिमानी है।

एक मोटे अनुमान के अनुसार- मान लीजिए एक व्यक्ति प्रतिदिन इस व्यसन पर 5 रुपये प्रत्यक्ष रूप से खर्च करता है (जिसमें डाक्टर की फीस शामिल नहीं है) तो वह एक महीने में $5 \times 30 = 150$ रुपये अनावश्यक खर्च करता है। यदि इस पैसे को वह मासिक बचत योजना के तहत डाकघर में जमा करवाना शुरू कर देता है तो उसे पांच वर्ष में लगभग 10000/- रुपये मिल जायेंगे। और इनको वह सवा सात वर्ष के लिए जमा करवादे तो उसे 20000/- रुपये मिल जायेंगे और इसी प्रकार वह उनको जमा करवाता रहे तो-

14 वर्ष 6 महीने में	-	40000/- रुपये
21 वर्ष 9 महीने में	-	70000/- रुपये
29 वर्ष में	-	160000/- रुपये
36 वर्ष 3 महीने में	-	320000/- रुपये
43 वर्ष 6 महीने में	-	640000/- रुपये
50 वर्ष 9 महीने में	-	1270000/- रुपये
57 वर्ष में	-	2460000/- रुपये

इस प्रकार यह तो केवल पांच वर्ष के ही खर्च को बचाने से हो सकते हैं यदि पाँच वर्ष के बाद भी वह मासिक बचत उसी प्रकार जमा करवाता रहे तो सोचकर देखो उस व्यक्ति के पास करोड़ों रुपये जमा हो सकते हैं और यह तो केवल तम्बाकू के ही आँकड़े हैं यदि शराब आदि के लगाएँ तो शिर चकरा जाएगा। अतः कौन कहता है आप गरीब हैं। बस आज से ही अभी से ही संकल्प करो कि मैं उपरोक्त दुर्व्यसनों का प्रयोग न करके इन पर जो धन खर्च करता हूँ उसे स्वयं के भविष्य, अपने परिवार व राष्ट्र की उन्नति के लिए मासिक बचत योजना के तहत जमा करवाऊँगा और सुखपूर्वक जिन्दगी व्यतीत करूँगा।

गठिये से राहत दिलाये गिलोय

गिलोय को अमृता भी कहते हैं। इसका रस सोमरस कहलाता है। इसे नियमित पीने से कई रोग दूर होते हैं। गिलोय के पत्तों को गर्म करके पेस्ट बनाकर या पत्तों को उबालकर प्रभावित स्थान पर लेप लगाने से गठिया रोग में आराम मिलता है।

त्रिफला और गिलोय के पाउडर को बराबर मात्रा में मिलाकर सुबह-शाम एक-एक चम्मच ताजे पानी से लेने से बढ़ा हुआ यूरिक एसिड सामान्य होने लगता है। गिलोय का रस पीने से डायबिटीज नियंत्रित

रहती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। स्नायु तंत्र मजबूत होता है और वेरीकोजवेन्स का दर्द भी दूर होता है।

गिलोय चूर्ण 200 ग्राम, गुड़ 20 ग्राम, शहद 20 ग्राम, गाय का घी 400 ग्राम मिलाकर लड्डू बनाकर नियमित खाने से शरीर स्वस्थ, ऊर्जावान् बनता है। समय से पहले बुढ़ापा नहीं आता।

-डॉ. आर.पी. चुघ (औषधीय वनस्पति ज्ञान कोश से साभार)

सुपौत्री का जन्मदिवस मनाया

श्री सतीश जी सन्दूजा श्रीमती सुदेश सन्दूजा धर्मपूरा बहादुरगढ़ द्वारा अपनी सुपौत्री नोहरा सुपौत्री समर सन्दूजा के द्वितीय जन्मदिवस पर जो अमेरिका में रहते हैं का 23 अक्टूबर शुक्रवार सायं काल आश्रम की यज्ञशाला में यज्ञ सत्संग के साथ जन्मदिवस मनाया गया। दादी सुदेश सन्दूजा से बधाई गीत से आशीर्वाद, श्री चांद सिंह आर्य, पुरुषार्थ मुनि और स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद दिया। अन्त में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पहला सुख निरोगी काया

आचार्य डॉ. प्रदीप द्विवेदी मो. 08115383332

हमारी भारतीय संस्कृति में पूज्य ऋषियों, मुनियों एवं सन्तों का मत है कि संसार में पहला सुख निरोगी काया है, अर्थात् शरीर का निरोग रहना और मन का स्वस्थ रहना सबसे बड़ा सुख है। यदि हमारे पास निरोगी शरीर नहीं है तो हम कोई भी कार्य को सुचारु रूप से नहीं कर सकते, बल्कि हम स्वयं समाज के ऊपर भारस्वरूप हो जायेंगे। तब हम औरों से अपनी सेवा करवाते हुए दूसरों का सेवारूपी कर्ज लेकर प्राण त्याग कर इस संसार से विदा हो जायेंगे।

ऋषि-मुनियों ने हमारे जीवन को 4 आश्रमों में बांट दिया है, जिसमें ब्रह्मचर्य आश्रम सबसे महत्वपूर्ण है। इसी आश्रम में मनुष्य के जीवन का बचाव-बिगाड़ होता है।

पच्चीस वर्ष का कार्यकाल ब्रह्मचर्य आश्रम माना गया है। इसमें मुख्य रूप से शक्ति और विद्या का अर्जन किया जाता है। इस आश्रम में हम यदि भोगी-विलासी हो गये तो हमारा स्वास्थ्य आगे जीवन में खराब रहने की पूरी गुंजाइश है और हम बीमारियों के चंगुल में फंस जायेंगे।

व्याधिग्रस्त तन-मन वाले व्यक्ति से कुछ नहीं बन सकता। दुःखों का अन्त होना ही आरोग्यता की सच्ची प्राप्ति है। इस प्रकार की आरोग्यता प्राप्त करना ही मानव जीवन का सच्चा पुरुषार्थ है। यदि हम बीमार हैं तो जप-तप साधना नहीं कर सकते। साधना में धैर्य के साथ जुटे रहने की शक्ति किन्हीं बिरले सन्तों में ही हो सकती है।

भारतीय दर्शन में जीवन के 4 पुरुषार्थ बताये गये हैं जिनमें धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए मनुष्य का स्वास्थ्य उत्तम एवं दीर्घायु होना आवश्यक माना गया है। अर्थात् हम किसी के आश्रित न होकर 'जीवेम शरदः शतम्' सौ वर्ष तक जीवित रहकर शुभ कर्म करते रहें, क्योंकि व्याधियों से ग्रस्त रहने वाला मन ही मानव का शत्रु और इसके विपरीत मानी इसके वश में न होकर स्वस्थ रहने वाला ही मानव का मित्र है।

मानव शरीर मिला प्रभु की असीम कृपा है।

ऐसी कीमती दुर्लभ योनि को पाकर इन्द्रियों के भोगों को सुख मानकर बीमार होकर आयु को गंवाना बुद्धिमानी नहीं है। इसलिए हमें दीर्घ आयु प्राप्त करने के लिए सदाचार युक्त जीवन जीना चाहिए, क्योंकि सदाचार युक्त जीवन का लम्बी आयु से गहरा नाता है। क्रोध न करना, मद्यपान और विषय भोगों से दूर रहने, पवित्रता से रहने, पूज्यों की सेवा करने से व्यक्ति दीर्घ आयु प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त सन्तुलित नींद लेने वाला, व्यायाम करने वाला, प्राणायाम करने वाला, तनावमुक्त, हंसमुख जीवन जीने वाला, दया-भाव रखने वाला एवं अहंकार रहित व्यक्ति बड़े-बड़े रोगों से मुक्त हो जाता है। स्वस्थ शरीर के लिए गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं—

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।

न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

अर्थात् यह योग न तो बहुत खाने वाले का, न बिलकुल न खाने वाले का, न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है। दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य सोने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

दीर्घायु एवं आरोग्यता के लिए जहाँ सदाचार युक्त जीवन प्रणाली का चलना आवश्यक है, वहीं ईश्वर का भजन भी आवश्यक है, क्योंकि ईश्वर का भजन करने वाले व्यक्ति के जीवन विपत्तियाँ और दुःख आते तो हैं, परन्तु थोड़े ही समय में चले भी जाते हैं। रोगों से छुटकारा पाने के लिए दवा और ईश्वर आराधना ये दो उपाय हैं, क्योंकि जहाँ दवा नहीं काम करती, वहाँ ईश्वर आराधना काम करती देखी गई है। इति।

संपर्क : एल-102, से.एल, एलडीए,
कानपुर रोड, लखनऊ-226012

माता-पिता बच्चों को सदा उत्तम शिक्षा दें

- विवेकानन्द शास्त्री

जब पाँच-पाँच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें अन्यदेशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता-पिता, आचार्य, विद्वान, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, बन्धु, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे-कैसे वर्तनों इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें। जिनसे सन्तान किसी धूर्त के बहकाने में न आवे और जो-जो विद्याधर्म विरूद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्।

प्रेतहारैः समं तत्र दश्राप्वेण शुद्ध्यति॥

अर्थ-जब गुरु का प्राणान्त हो तब मृतकशरीर जिसका नाम प्रेत है उसका दाह करने हारा शिष्य प्रेतहार अर्थात् मृतक को उठाने वालों के साथ दशवें दिन शुद्ध होता है और जब उस शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था। जितने उत्पन्न हो, वर्तमान में आके न रहें, वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से, लेके आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धांत है परन्तु जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसको भय और शंकारूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं।

देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र का पदार्थविद्या के पढ़ने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपात ज्वरादि शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं। उनका औषधसेवन और पथ्यादि उचित व्यवहार न करके उन धूर्त, पाखण्डी, महामूर्ख, अनाचारी, स्वार्थी, भंगी, चमत्कार, शूद्र, म्लेच्छादि पर भी विश्वासी होकर अनेक प्रकार के ढोंग, छल,

कपट और उच्छिष्ट भोजन, डोरा, धागा आदि मिथ्या मन्त्र-यन्त्र बाँधते-बंधवाते फिरते हैं। अपने धन का नाश, सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ा कर दुःख देते फिरते हैं। जब आँख के अँधे और गाँठ के पूरे उन दुर्बुद्धि पापी स्वार्थियों के पास जाकर पूछते हैं कि महाराज! इस लड़का, लड़की, स्त्री और पुरुष को न जाने क्या हो गया है? तब वे बोलते हैं कि इसके शरीर में बड़ा भूत, प्रेत, भैरव, शीतला आदि देवी आ गई है, जब तक तुम इसका उपाय न करोगे तब तक ये न छूटेंगे और प्राण भी ले लेंगे। जो तुम मलीदा वा इतनी भेंट दो तो मन्त्र जप पुरश्चरण से झाड़ के इनको निकाल दें। तब वे अन्धे और उनके सम्बन्धी बोलते हैं कि महाराज! चाहे हमारा सर्वस्व ले लो परन्तु इनको अच्छा कर दीजिए। तब तो उनकी बन पड़ती है। वे धूर्त कहते हैं, अच्छा, लाओ इतनी सामग्री, इतनी दक्षिणा देवता को भेंट और ग्रहदान कराओ। झांझ, मुदंग, ढोल, थाली लेके उसके सामने बजाते गाते और उनमें से एक पाखण्डी उन्मत्त होके नाच कूद के कहता है मैं इसका प्राण ही ले लूंगा। तब वे अन्धे उस भंगी, चमार आदि नीच के पगों में पड़ के कहते हैं आप चाहें जो लीजिए इसको बचाइये। पक्की मिठाई, तेल, सिन्दूर, सवा मन का रोट और लाल लंगोट। मैं देवी का भैरव हूँ लाओ पांच बोतल मद्य, बीस, मुर्गी, पाँच बकरे, मिठाई और वस्त्र। जब वे कहते हैं कि जो चाहो सो लो तब तो वह पागल बहुत नाचने कूदने लगता है। परन्तु जो कोई बुद्धिमान उनकी भेंट पाँच जूता, दंडा वा चपेटा, लातें मारे तो उसके हनुमान, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ ढोंग है और जब किसी ग्रहग्रस्त ग्रहरूप ज्योतिर्विदाभास के पास जाके वे कहते हैं-हे महाराज! इसको क्या है? तब वे कहते हैं कि इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़े हैं, वो तुम इनकी शान्ति पाठ, पूजा, दन कराओ, तो इसको सुख हो जाय, नहीं तो बहुत पीड़ित होकर मर जाये तो भी

आश्चर्य नहीं।

कहिये ज्योतिर्वित्! जैसी यह पृथ्वी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित हो के दुःख और शान्त होके सुख दे सकेंगे?

प्रश्न-क्या जो यह संसार में राजा-प्रजा सुखी-दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नहीं?

उत्तर-नहीं ये सब पाप पुण्यों का फल है।

प्रश्न-तो क्या ज्योतिषशास्त्र झूठा है?

उत्तर-नहीं जो उसमें अंक, बीज, रेखागणित विद्या है वह सब सच्ची है, जो फल की लीला है वह सब झूठी है।

प्रश्न-क्या जो यह जन्मपत्र है सो निष्फल है?

उत्तर-हां, वह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम शोकपत्र रखना चाहिये क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है परन्तु यह आनन्द तब तक होता है जब तक जन्मपत्र बन के ग्रहों का फल न सुने। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उसके माता-पिता पुरोहित से कहते हैं। महाराज! आप बहुत अच्छा जन्मपत्री बनाइये। जी धनाढ्य हो तो बहुत सी लाल पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्मपत्र बनाने को आता है। तब उसके माँ-बाप ज्योतिषी जी के सामने बैठ के कहते हैं इसका जन्मपत्र बनाके सुनाने को आता है। इसका जन्मपत्र अच्छा तो हैं? ज्योतिषी कहता जो है सो सुना देता हूँ। इसके जन्मग्रह बहुत अच्छे और मित्रग्रह भी बहुत अच्छे हैं। जिनका फल धनाढ्य और प्रतिष्ठावान जिस सभा में जो बैठेगा तो सबके ऊपर इसका तेज पड़ेगा। शरीर से आरोग्य और राज्यमानी होगा। इत्यादि बातें सुन के पिता आदि बोलते हैं। वाह ज्योतिषी जी आप बहुत अच्छे हैं। ज्योतिषी जी समझते हैं इन बातों से कार्य सिद्ध नहीं होता। तब ज्योतिषी बोलता है कि ये ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं अर्थात् फलाने-फलाने ग्रह के योग से 8 वर्ष में इसका मृत्युयोग है। इसको सुन के माता-पितादि पुत्र के जन्म के आनन्द को छोड़ के शोक सागर में डूब कर ज्योतिषी से कहते हैं उपाय करो, गृहस्थ पूछे क्या उपाय करें। ज्योतिषी

जी प्रस्ताव करने लगते हैं कि ऐसा-ऐसा दान करो। ग्रह के मन्त्र का जप कराओ और नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराओगे तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न हट जायेंगे। अनुमान शब्द इसलिए है कि जो मर जायेगा तो कहेंगे हम क्या करें परमेश्वर के ऊपर कोई नहीं है। हमने तो बहुत-सा यत्न किया और तुमने कराया उसके कर्म ऐसे ही थे और जो बच जाय तो कहते हैं कि देखो-हमारे मन्त्र, देवता और ब्राह्मणों की कैसी शक्ति है? तुम्हारे लड़के को बचा दिया। यहाँ पर बात होनी चाहिए कि जो इनके जप पाठ से कुछ न हो तो दूने तिगुने रूपसे उन धूर्तों से ले लेने चाहिए ओर बच जाय तो भी ले लेने चाहिये, क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा कि इसके कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं वैसे गृहस्थ भी कहें कि यह अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है तुम्हारे करने से नहीं और तीसरे गुरु आदि भी पुण्य दान करा के आप ले लेते हैं जो उनको भी वही उत्तर देना, जो ज्योतिषियों को दिया था।

अब रह गई शीतला और मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि। ये भी ऐसे ही ढोंग चलाते हैं। कोई कहता है कि जो हम मन्त्र पढ़ के डोरा वा/यन्त्र बना दें तो हमारे देवता और पीर उस मन्त्र यन्त्र के प्रताप से उसको कोई विघ्न नहीं होने देते। उनको वही उत्तर देना चाहिए कि क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे? तुम्हारे इस प्रकार करने से भी कितने ही लड़के मर जाते हैं और तुम्हारे घर में भी मर जाते हैं और क्या तुम मरण से बच सकोगे? तब वे कुछ भी नहीं कह सकते और वे धूर्त जान लेते हैं कि यहाँ हमारी दाल नहीं गलेगी। इससे इन सब मिथ्या व्यवहारों को छोड़ कर धार्मिक, सब देश के उपकारकर्ता, निष्कपटता से सबको विद्या पढ़ाने वाले, उत्तम विद्वान लोगों का प्रत्युपकार करना जैसा वे जगत् का उपकार करते हैं इस काम को कभी न छोड़ना चाहिए और जितनी लीला रसायन, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि करना कहते हैं उनको भी महापामर समझना चाहिए।

इत्यादि मिथ्या बातों का उपदेश बाल्यावस्था में ही सन्तानों के हृदय में डाल दें कि जिससे स्वसन्तान किसी के भ्रमजाल में पड़ के दुःख न पावें।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री आत्मशुद्धि आश्रम

- सेल्समैन-सर कॉकरोच के लिए पाउडर लोगे क्या?
ग्राहक-जी नहीं! कॉकरोच को इतना प्यार नहीं करते, आज पाउडर लगा देंगे। कल साला परफ्यूम मांगेगा।
- थानेदार-जब तुम्हारे यहां चोरी हुई थी तो कितना बजा था।
पठान-चार लठठ हम पर और 1 लठठ बेगम पर बजा था।
थानेदार-मैं पूछता हूँ कि घड़ी में कितना बजा था।
पठान-साहब घड़ी में तो एक ही लट्ट बजा था, तभी घड़ी टूट गई थी।
- औरत- आम वाले से-इस आम में तो कीड़ा निकला
आमवाला-वह तो किस्मत की बात है आज कीड़ा निकला पता नहीं कल 'कार' निकल जाये।
औरत-ठीक है 5 किलो और दे दो।
- पप्पु-ये दवाई की गोली का पैकेट 10 गोली का ही क्यों होता है।
चप्पु-जब रावण को सिरदर्द हुआ तो उसी ने यह प्रथा चलाई थी।
- पुलिस-हमें तुम्हारे घर की तालाशी लेनी है हमें खबर मिली है कि तुम्हारे घर में विस्फोटक सामग्री है।
- पति-सर खबर तो पक्की है बिल्कुल ठीक है पर वो अभी मायके गई है।

जीवन बहुमूल्य है इसका विवेक पूर्वक उपयोग ही मानव मात्र के लिए हितकारी है। अन्यथा यह कम भयावह नहीं।

क्षमा दान

- श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपूरा बहादुरगढ़

क्षमा दान सबसे बड़ा दान है पर इंसान आसानी से दूसरों को क्षमा नहीं कर पाता क्योंकि वह दूसरों के प्रति ईर्ष्या रखता है तथा कड़वाहट भरा जीवन व्यतीत करता है सोचता है कि मैं क्षमा कैसे करूँ, इसने तो मुझे चोट पहुँचाई है, मैं भी इसे चोट पहुँचा कर ही दम लूंगा। ईंट का जवाब पत्थर से देने की भावना मनुष्य के जीवन को नर्क बना देती है। अगर हम किसी को क्षमा नहीं कर पा रहे तो अवश्य ही बदले की भावना जागृत होती है। परन्तु ऐसा करने से नुकसान किसका हो रहा है अपना या दूसरों का? क्षमा का दान केवल महान व्यक्ति ही दे पाते हैं। क्षमा मानव का आभूषण है, क्षमा करने से इंसान छोटा नहीं बनता बल्कि और गुणवान बन जाता है। क्षमा ब्रही कर पाते हैं जिनका हृदय सागर की तरह विशाल होता है। जो अपने मन का मैल साफ करते हैं। कई मनुष्य क्षमा मांगने में शर्म महसूस करते हैं। सोचते हैं कि हम इनसे कम थोड़े ही हैं, हमारी भी कोई अहमियत है, वह अहंकार में जीते हैं वे बाहर से खुश होने का दिखावा करते हैं परन्तु वास्तव में वह उन लकड़ी की तरह हैं जिसे अन्दर से दीमक खा गई है। कहावत है, "झुकता वही है जिसमें ज्ञान होती है, अकड़े रहना मुर्दे की पहचान होती है।" गुणवान व्यक्ति सहज ही झुक कर क्षमा मांग लेता है तथा सम्बन्धों में मधुरता कायम रखता है। सुखी जीवन जीने के लिए दूसरों को क्षमा करना सीखें, इससे हम स्वयं को भी तथा दूसरों को भी दर्द से दूर रख सकेंगे। याद रहे कि हर आत्मा इस सृष्टि मंच पर अपना भाग्य लेकर आई है, कोई किसी का भाग्य छीन नहीं सकता।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। -विक्रमदेव शास्त्री

मोटियों की लड़ी - कन्हैया लाल आर्य



कन्हैया लाल आर्य

1. प्रशंसा वह हथियार है जिससे शत्रु भी मित्र बनाया जा सकता है।
2. आदर प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है कि पहिले आप दूसरों का आदर करें।
3. महानता दिखाई नहीं जाती, वह स्वयं दिखने लगती है। अतः अपने गुणों की चर्चा मत करो, दूसरे आप के गुणों की चर्चा करें यही महानता है।
4. नये विचारों को सदैव सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है और आमतौर पर उसका विरोध किया जाता है परन्तु नये विचार रखने के लिए धैर्य धारण करें, उद्विग्न न हो, सफलता अवश्य मिलेगी।
5. एक मुस्कराहट मन की गांठे आसानी से खोल देती है, मेरे मन की ही नहीं, तुम्हारे मन की भी।
6. जो भारी कोलाहल में संगीत को सुन सकता है अर्थात् कर्म में व्यस्त रहता है वही महान उपलब्धि को प्राप्त करता है।
7. जो आपत्ति के समय में भी शान्त चित्त से विचार कर सकते हैं, वे ही सच्चे धैर्यवान होते हैं।
8. पुरुषार्थ सहित की गई प्रार्थना से शरीर को वास्तविक सुख, मन को शान्ति और आत्मा को आनन्द की प्राप्ति होगी।
9. स्वयं का शत्रु वह है जो दूसरों की निन्दा करने में थकता नहीं और अपनी आलोचना करने वालों को अपना घोर शत्रु माने।
10. दूसरे क्या करते व कर रहे हैं इस बात पर ध्यान न देकर हम स्वयं क्या कर रहे हैं, इस बात पर ध्यान देना चाहिए, यही जीवन निर्माण की क्रिया है।

4/45, शिवाजी नगर, गुडगांव, हरियाणा, चलभाष-09911197073

चादर छोटी, पाँव लम्बे

- आर.पी. आनन्द

यह अपने आप में एक प्रश्न है कि जब चादर छोटी हो और पाँव लम्बे हो तो क्या करना चाहिए। अज्ञानी पुरुष तो यही कहेगा कि पाँव को काट देना चाहिए। परन्तु ज्ञानी पुरुष अपने विवेक से इसका उत्तर इस प्रकार देगा कि हमें अपने पाँव को सिकुड़ लेना चाहिए अर्थात् हमारी इच्छायें इतनी अधिक है कि उन्हें पूरा करते हमारा सारा जीवन संसारिक विषयों में ही व्यतीत हो जायेगा। तो फिर ईश्वर का भजन, उपासना कब करेंगे और कैसे कर पायेंगे।

कहते हैं मानव तन बड़े शुभ कर्मों के पश्चात् ही मिलता है। यदि हम अपनी वासनाओं और इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही यह मानव जन्म खो दिया तो फिर मानव जन्म पाकर क्या पाया। किसी कवि ने बड़े सुन्दर शब्दों में मानव जीवन का वर्णन इस प्रकार किया है कि-

चली जा रही है यह जीवन की रेल,
समझकर खिलौना इसे तू न खेल,
कुशल कारीगर ने इसे है बनाया,
बड़ी अकलमन्दी से इसको चलाया,
पड़े इसके इंजन में कर्मों का तेल।

प्राणी इस संसार में अपनी मर्जी से नहीं आते। ईश्वर मानव को उसके शुभ कर्मों के अनुसार ही उसे अमीर या गरीब के घर में जन्म देता है। परन्तु हम प्राणी इस संसार में आकर अपने रहने के लिए महल गाड़ियां बना लेते हैं यह सोचकर कि अब हमें इस संसार को छोड़कर कभी नहीं जाना है। यह हमारा सदैव रहने वाला संसार है। मनुष्य यह भूल जाता है कि उसे किसी न किसी दिन मृत्यु का ग्रास तो बनना ही पड़ेगा क्योंकि मृत्यु का कोई समय निश्चित नहीं है। मृत्यु हमेशा और हरदम हमारे सिर पर मंडरा रही है। सासों का क्या भरोसा फिर आये या न आये। सामान सौ वरस का, पल की खबूर नहीं। इसलिए हमें सदैव ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करते रहना चाहिए। अपनी कामनाओं को, इच्छाओं को कम करना ही होगा। मन को एकाग्र कर ईश्वर में दृष्टि लगानी होगी तभी हम मोक्ष की प्राप्ति के हकदार हो सकते हैं। तभी हम अपनी आत्मा की तृप्ति कर सकते हैं जो हमारे जन्म का मुख्य लक्ष्य है।

भजन

चरित्र और आचार हमारा था मशहूर जमाने में,
मगर आज भारत का गौरव लग रहे लोग मिटाने में
रामायण बतलाती है आचार यहां का कैसा था
मर्यादा में बंधा हुआ परिवार यहां का, कैसा था
सूपर्णखा से पूछ लिया सदाचार यहां का कैसा था
सती सलोचना कह देगी व्यवहार यहां का कैसा था
जरा देर ना लगी सती कोल्हास पति की लाने में,
रामचन्द्र और सीता जी का कितना उत्तम जीवन है
चौदह साल रहे साथ-साथ फिर भी काबू में मन है
भाई भाबी की सेवा करके यति लक्ष्मण प्रसन्न है
कठिन तपस्या चौदह साल की वाह उर्मिला तुझे धन्य है,
बिना पति के चौदह साल कर दिया कमाल बिताने में,
इन्द्र की उर्वशी आई अर्जुन के पास पढ़कर देखो
छूकर चरण कहा माता जी इतिहास पढ़कर देखो
जेल के अन्दर गुलेनार से दुर्गादास पढ़कर देखो
लेकिन आज तो धर्म कर्म कर लिया नाश पढ़कर देखो
ऐसे करते कर्म यहां जिन्हें आवे शर्म बताने में
एक बार की बात दयानन्द मथुरा में ठहरे थे
एक लड़की ने पैर छुए वो रूको-रूको कहरे थे
तीन दिन का उपवास किया जहां ठंडे जल बह रहे थे
अगर गौर से देखो ऋषीवर सागर से गहरे थे
खेमचन्द तू योगी राज के गुण गाया कर गाने में॥

इसी को ही जीवन कहते हैं

- ऋषि राम कुमार

एक पेड़ ने दूसरे पेड़ से
कहा, पेड़ भाई एक बात आप से
पूछू, दूसरा पेड़ बोला हो पेड़
भाई पूछिये, पहला पेड़ बोला,
हम इंसानों के लिए फल, सब्जियां,
दवाईयां, ऑक्सीजन आदि का
प्रबन्ध करते हैं लेकिन इंसान फिर
भी कुल्हाड़ी लेकर हमें काटने के
लिए आ जाता है, ऐसा क्यों?



क्या हमें ऐसे इंसानों की मदद करनी चाहिए?,
दूसरा पेड़ बोला-हां करनी चाहिए, क्योंकि इंसान क्या
कर्म करता है उससे हमारा कोई लेना देना नहीं है, जो
वह करता है उसका फल वो स्वयं ही भुगतेगा, हमें
अपने अच्छे कर्म से पीछे नहीं हटना चाहिए, हम पेड़
हैं इंसान नहीं हैं। जब तक हम जिन्दा हैं तब तक हमें
प्राणी मात्र की सेवा करनी है, यह हमारा कर्म और धर्म
है पीछे हटना हमारी कमजोरी होगी, इसलिए बिना
अपनी चिन्ता किये सबका भला करते जाओ बस इसी
को ही जीवन कहते हैं।

- 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुडगांव (हरियाणा)-122001

शोक महाशोक

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य संस्कृति
के उपासक, पोषक व रक्षक, देश-विदेश में वैदिक धर्म की अलख जगाने वाले,
प्रखर राष्ट्रवादी, देशभक्त, महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी
सभा के यशस्वी प्रधान एवम् मुख-पत्र परोपकारी के सम्पादक व ज्वलन्त सम
सामयिक विषयों पर सटीक झकझोरने वाले सम्पादकीय लिखने वाले, आस्था
चैनल पर वैदिक धर्म प्रचार के प्रखर प्रवक्ता, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा
देश के सभी विश्वविद्यालयों में महर्षि दयानन्द सरस्वती शोध पीठ की स्थापना के
अभूतपूर्व निर्णय के सूत्र-धार, हम सब के अपने लोकप्रिय श्रद्धेय आचार्य डॉ.
धर्मवीर जी का दिनांक 6 अक्टूबर 2016 को ब्रह्ममुहूर्त में प्रातः काल 05 बजे
देहावसान हो गया। उनके निधन से एक युग का अवसान हो गया। उनका जाना आर्य जगत की एक बहुत बड़ी
अपूरणीय क्षति है। गहरी संवेदनाएँ और भाव-भीनी श्रद्धांजलि प्रभु हम सबको संबल और शक्ति प्रदान करें।
उनके अधूरे मिशन को पूरा करने की चुनौती है। आइये हम सब संकल्पशील हों।



ओ३म् शान्तिः!! शान्तिः!! शान्तिः!!!

शोक संतप्त समस्त आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ और फर्खनगर के सर्वसदस्य गण।

काल या समय की गणना की एक इकाई का नाम-मुहूर्त

- गंगा शरण आर्य

काल गणना क्या है? काल वह है जिसे हम भूत, भविष्य और वर्तमान कहते हैं। वर्तमान वह है जो समय चल रहा है। भविष्य वह जो अभी हुआ नहीं पर होने वाला है और भूत वह समय है जो बीत चुका है। इस बात को उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं:- जैसे जब किसी बच्चे का जन्म होता है तो हम जिस दिन उसका जन्म हुआ उसी दिन से लेकर 365 दिन बीत जाने पर कहते हैं कि वह एक वर्ष का हो गया अर्थात् एक-एक दिन उसके जन्म से गिनते जाते हैं और जब तक गिनते हैं जब तक कि वह जीवित रहता है ताकि हमें याद रहे कि वह व्यक्ति संसार में कितने वर्ष, कितने दिन तक रहा। ठीक इसी प्रकार परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि को बने हुए कितने वर्ष हो गए हैं इसका हिसाब-किताब हमारे ऋषि-मुनियों ने रखा है। आज तक उस बीते हुए काल को याद रखने के लिए भारत के हर परिवार में विवाहादि संस्कार पर संकल्प पाठ कराया जाता है जिसमें सृष्टि संवत् को अवश्य पढ़ा जाता है कि आज इतनी सृष्टि संवत् के दिन इन्होंने यह संस्कार कराया।

आप सोच रहे होंगे कि आज तक के सृष्टि संवत् की गणना कैसे हमारे ऋषि-मुनियों ने की होगी कोई बड़ी बात नहीं है। पुरातन काल में हमारे पूर्वज गणित ज्योतिष के आधार पर काल यानि समय को पल, घड़ी, पहर आदि से गिनते थे। समय मापने की सबसे छोटी इकाई है विपल और एक विपल में 0-4 सैकेण्ड होते हैं। जब 24 सैकेण्ड बीतते हैं तब एक पल बीत जाता है क्योंकि 60 विपल एक पल के बराबर होते हैं। इस प्रकार 24 मिनट बीतते हैं तो एक घड़ी बीत जाती है क्योंकि 60 पल एक घड़ी के बराबर होते हैं। जब 24 घण्टे बीतते हैं तब एक दिवस (एक दिन) बीत जाता है क्योंकि 60 घड़ी एक दिन के बराबर होती हैं और जब दो घड़ी बीतती हैं तो एक मुहूर्त बीत जाता है क्योंकि एक मुहूर्त $24 \times 2 = 48$ मिनट का होता है। इस प्रकार सारे दिन में 30 मुहूर्त होते हैं और साढ़े सात घड़ी बीतने पर एक प्रहर बीत जाता है जो कि तीन घण्टे के बराबर होता है। कहने का तात्पर्य

है कि सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के काल यानि एक अहोरात्र अर्थात् एक दिन और एक रात में 24 घण्टे अर्थात् 60 घड़ी अर्थात् 8 प्रहर अर्थात् 30 मुहूर्त होते हैं। इसी प्रकार मास, पक्ष व तिथियों की गणना की जाती है जिसे आज हम अंग्रेजियत के प्रभाव होने के बावजूद देसी महीना व देसी तिथि कहते हैं। 30 दिन का एक मास (महीना) होता है, जिसमें 15 दिन शुक्ल पक्ष के तथा 15 दिन कृष्ण पक्ष के होते हैं। उसी को हम आज क्रमशः प्रतिपदा (प्रथमा), द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी कहते हैं और दोनों पक्षों में तिथियों की गणना अलग-अलग की जाती है। शुक्ल पक्ष की अन्तिम यानि 15वीं तिथि को पौर्णमासी तथा कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि को अमावस्या कहते हैं। इसी प्रकार 12 महीनों का एक वर्ष होता है जिसे हम क्रमशः चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन कहते हैं। हमारे तीज त्योहार आज भी इन्हीं देसी तिथियों व महीनों के हिसाब से मनाए जाते हैं जो प्रतिवर्ष अंग्रेजी कलैण्डर में बदलते रहते हैं। आदिकाल से ही 'वेदादि आर्ष ग्रन्थों के अनुसार' मुहूर्त का अर्थ केवल थोड़ी देर और दो घटिकाओं (दो घड़ी) ही लिया जाता रहा है लेकिन जैसे-जैसे हमारी मान्यताएँ ईश्वर की पवित्र वाणी 'वेद' से दूर होती चली गई, वैसे वैसे मनमानी होने लगी और पेटार्थी धन-लोलुप ब्राह्मणों द्वारा मुहूर्त का एक तीसरा अर्थ और निकाल लिया गया जिससे समाज की शिक्षित वर्ग भी दिगभ्रमित होने लगा। हिन्दू समाज इन पाखण्डियों द्वारा फलित ज्योतिष के नाम पर इतना डरा दिया गया है कि आज मकान की नींव रखनी हो, विवाह आदि करने हो, गृह प्रवेश करना हो, गाड़ी खरीदनी हो या किसी भी प्रकार का अन्य कोई भी शुभ कार्य करना हो तो हमें उस काल का इन्तजार करना पड़ेगा जो मुहूर्त के उस तीसरे अर्थ को प्रकट करता है जिससे इन 'आंख के अंधेव गांठ के पूरे' पेटार्थियों का मन्वतव्य पूरा हो सकें। इनके बात अनुसार मुहूर्त का तीसरा अर्थ

है वह काल-विशेष जो किसी भी शुभ कृत्य के लिए योग्य हो अर्थात् काल गणना की इस इकाई मुहूर्त को भी इनके द्वारा शुभ-अशुभ कहा जाने लगा जिससे हमारे वर्ष के सभी दिन किसी न किसी कारणवश शुभ-अशुभ माने जाने लगे और इनके चक्कर में पड़कर सारा हिन्दू समाज निरन्तर अविद्या के गर्त में पड़कर लुटता जा रहा है। मैं जनमानस से कुछ निवेदन करना चाहूंगा कि यदि शुभ कार्यों का शुभ मुहूर्त निकलवाते हो तो अशुभ कार्यों में जैसे मृतक को मृत्यु और अन्त्येष्टि क्रियाकर्म आदि का भी मुहूर्त क्यों निकलवाते? जब आपके बिगड़े काम शुभ मुहूर्त पर करने से बन सकते हैं तो क्या ऐसा करने से मृतक को अच्छी योनि में जन्म नहीं मिल सकता? लेकिन ये असम्भव है।

ब्रह्ममुहूर्त क्या है? उपरोक्त बताए गए इन 30 मुहूर्तों के तैत्तिरीय ब्राह्मण के नामकरण भी किए हैं महर्षि मनु ने भी ब्रह्ममुहूर्त की चर्चा मनुस्मृति आदि में की है। ब्रह्म कालविशेष का एक पारिभाषिक नाम है। इसका प्रकृति की दृष्टि से अपना महत्व है। यह समय सूर्योदय से दो घण्ट

पूर्व का है। इस समय वृक्ष ऑक्सीजन छोड़ना प्रारम्भ कर देते हैं। चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं। प्रकृति का यह मनोहारी एवं आनन्दकारी समय होता है। इस समय नींद से जागकर बिस्तर छोड़ देना चाहिए और ईश्वर का ध्यान व चिंतन कर घर से बाहर खुले आकाश के नीचे दीर्घ श्वास लेते हुए भ्रमण करना चाहिए जो स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम होता है। परन्तु इन सबका तथाकथित फलित ज्योतिष से कोई दूर तक भी सम्बन्ध नहीं है। वास्तव में मुहूर्त काल या समय को गिनने की एक इकाई का नाम है। इसका शुभ-अशुभ से कोई लेना-देना नहीं।

अंत में मैं पाठकों से आशा करता हूँ कि अपने बुद्धि रूपी मणिमुकुट का प्रयोगकरके परमात्मा-प्रदत्त अमृत रूपी, 'वेदज्ञान' से अपनी आत्मा को आलोकित करें एवं अविद्या और अन्धविश्वास में पड़कर अपने जीवन को नारकीय बनने से बचाए, इसी में ही संसार के सारे सुख निहित हैं।

- साहित्य सुमन

- चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला
ग्राम-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-9871644195

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की
हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872



आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

माता परमेश्वरी देवी परम मित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक	100000/-	श्री सुशील सुद जी ग्राउण्ट फ्लोर कालका जी दिल्ली	2100/-
श्री अम्बरीश जी झाम्ब हैरीटेज सिटी, गुडगांव	25000/-	पं. राधेश्याम जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री एम.एम कौशल एडवोकेट सैक्टर-14, गुडगांव	21000/-	श्री दिव्यांश सैक्टर-2, बहादुरगढ़	2100/-
श्री ओम्प्रकाश कथूरिया ओम् स्वीट्स गुडगांव	11000/-	श्रीमती रश्मि ठाकुर पत्नी श्री सत्यदेव ठाकुर पश्चिम विहार, दि.	2100/-
श्री जे.के. मेहता प्रबन्ध निर्देशक ओमैक्स आटोज लि. गुडगांव	11000/-	श्री सुमित कुमार सु. श्री डी.डी. बंसल, बहादुरगढ़	2100/-
डॉ. अशोक चौहान जी डिफेन्स कॉलोनी दिल्ली	11000/-	कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री रवि कुमार जी अंजलि प्रॉपर्टीज बहादुरगढ़	11000/-	श्री रविन्द्र सु. श्री रामधन जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती सरोज भल्ला जी पत्नी श्री अजय भल्ला जी		श्री वेदप्रकाश जी आर्य उत्तम नगर दिल्ली	2000/-
गुलमोहर पार्क, दिल्ली	11000/-	श्री बलदेव राज जी ज़िंदल पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1500/-
श्री विजय भास्कर राजपाल सु. श्रीमती चन्द्रकला राजपाल दि.	10000/-	डॉ. सुभाष जी नागपाल, झज्जर, हरियाणा	1500/-
श्री अनिल कुमार बरेजा पत्नी श्रीमती रेखा बरेजा मदनपुरी रोड, गु.	6000/-	श्री विक्रम विजय धर्मविहार, बहादुरगढ़	1500/-
श्री योगेन्द्र जी वत्स सुपुत्र श्रीमती मिश्री देवी श्याम विहार, दिल्ली (भोजनार्थ)	6000/-	श्री मदनलाल जी रेलन गुडगांव, हरियाणा	1200/-
आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव	5100/-	श्री अशोक जी जून नूना माजरा, बहादुरगढ़	1111/-
श्री अशोक कुमार जी गुप्ता, मण्डी, बहादुरगढ़	5100/-	श्री भगवान सुपुत्र श्री हरबन्स जी गद्दी सांपला हरियाणा	1100/-
कैप्टन रूद्रसेन जी सिन्धू दिल्ली	5100/-	श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा, बहादुरगढ़	1100/-
श्री जे.के. मैमोरियल ट्रस्ट बहादुरगढ़ झज्जर	5100/-	मा. दलबीर सिंह आर्य सैक्टर-2, बहादुरगढ़	1100/-
श्री धर्मसिंह जी दराल टीकरी कलां, दिल्ली	5100/-	शहीद राज सिंह जून नूना माजरा बहादुरगढ़	1100/-
श्री जयदेव जी हसीजा 'वानप्रस्थ' साकृथ सिटी, गुडगांव	5100/-	श्रीमती विजय कुमारी जी पत्नी श्री डी.डी. बंसल जी बहा.	1100/-
श्री पवन सोमा पट्टा शिवपुरी गुडगांव	5100/-	श्री नारायण सिंह जी एडवोकेट ग्राम जसोदखेड़ी	1100/-
श्री बलवंत सिंह जी आर्य एवं परिवार माजरा डबास दिल्ली	5100/-	श्री सत्यपाल जी वत्स आर्य काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
डॉ. विनोद मलिक जी म.न. 21, किदवई नगर, दिल्ली	5100/-	स्व. श्री दफेदार सुल्तान सिंह ग्राम गद्दी सांपला	1100/-
श्री योगेश मुंजाल जी मुंजाल शोभा लि. गुडगांव	5100/-	श्री रवीश सु. श्री राजीव जी पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्री प्रकाशवीर जी आर्य झज्जर हरियाणा	5100/-	श्री राजेन्द्र जी आर्य लाम्बा पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्रीमती राजवन्ती दहिया बहादुरगढ़	5100/-	श्री सुरेन्द्र जून सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री नरेश शौकीन पौत्र के जन्मदिव पर	5100/-	श्री बुद्धवन्त लाल जी गुलाटी पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्रीमती सावित्री एवं हीरालाल चावला पश्चिम विहार, दि.	5100/-	श्री महेंद्र कुमार सुपुत्र श्री शम्भुदयाल जी अनाजमण्डी बहा.	1100/-
श्री बलवान सिंह साल्हावास झज्जर	5000/-	श्री नकुल शौकिन सुपुत्र श्री बिजेन्द्र शौकिन गुडगांव हरियाणा	1100/-
श्री ओम्प्रकाश जी जिन्दल मेडिकल स्टोर ताबडू-	5000/-	श्री पंकज कालड़ा, नई कॉलोनी गुडगांव	1100/-
रूपक डार सूरत गुजरात	5000/-	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली	1100/-
श्री रत्नलाल सिंघला सांपला रोहतक	5000/-	आर्य समाज मन्दिर, नई कॉलोनी गुडगांव	1100/-
प्रि. कर्णसिंह जी आर्य माजरा डबास दिल्ली (संग्रह करके)	4100/-	श्री यशपाल जी कामरा शिवाजी नगर, गुडगांव	1100/-
श्री आदित्य सिंह निलोटी	4100/-	श्री कैलाश गुप्ता ट्रिनिटी टावर गुडगांव	1100/-
श्री पोहकर सिंह नेहरा निधाना रोहतक	3100/-	श्री लक्ष्मण पाहूजा प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव	1100/-
श्रीमती सुदेश कालड़ा पश्चिम विहार, दिल्ली	3100/-	श्री अजीत सिंह जी दराल टीकरी कलां, दिल्ली	1100/-
श्री विश्वमित्र जी ठुकराल ग्रीन पार्क, दिल्ली	3000/-	लाज जीवन नर्सिंग होम झज्जर, हरियाणा	1100/-
श्री डी.डी. बंसल जी अनाजमण्डी बहादुरगढ़	3000/-	डॉ. स्नेह लता जी पत्नी श्री जगवीर सिंह जी सैक्टर-2, बहादुरगढ़	1100/-
श्री हरदयाल जी कटारिया विकास कुंज विकासपुरी, दिल्ली	2500/-	श्रीमती सुमन देवी पत्नी श्री आशाराम जी पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री सत्यदेव वशिष्ठ जी बहादुरगढ़	2100/-	माता आशा जी पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्री धर्मदेव जी खुराना रोहिणी दिल्ली	2100/-	स्त्री आर्य समाज पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्रीमती मनीषा मल्होत्रा पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-	श्री प्रदीप जी आर्य स्वर्ण अपार्टमेंट रोहिणी, दिल्ली	1100/-
श्री मदनलाल जी रेलन गुडगांव, हरियाणा	2100/-	श्री हंसराज जी पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
आर्य समाज मन्दिर, पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-	श्री राम प्रकाश जी आर्य नरवाना, हरियाणा	1100/-
श्री सोमनाथ जी मल्होत्रा विजय पार्क गुडगांव	2100/-	श्री मंजीत आर्य सुपुत्र श्री विनेन्द्र जी आर्य गुडगांव	1100/-
श्री विकास मेहता सुपुत्र स्व. श्री सोमनाथ जी प्रताप नगर, गु.	2100/-	श्री मानकटाला परिवार पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
श्री एस.के. मेहता सैक्टर-17, गुडगांव	2100/-	आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली	1100/-
श्री महावीर जी बत्रा आदर्श नगर, दिल्ली	2100/-	आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट गुडगांव	1100/-
श्री रामचन्द्र जी मलिक अटायल रोहतक	2100/-	श्री अंकुर जी सुपुत्र श्री रामरत्न जी बहादुरगढ़	1100/-
आयुष्मति खुशी व चिरंजीव नमन बहादुरगढ़	2100/-	श्रीमती ऊषा सिंह पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
ट्रक यूनिन परनाला रोड, बहादुरगढ़	2100/-	श्रीमती लक्ष्मी जी पत्नी श्री मा. ब्रह्मजीत जी बहादुरगढ़	1100/-
		डॉ. अशोक जी नागपाल झज्जर, हरियाणा	1000/-
		श्री बिजेन्द्र अनिल कुमार जी गिरधर, पश्चिम विहार दिल्ली	1000/-
		मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र शर्मा बराही रोड, बहादुरगढ़	1000/-
		कुमारी शालिनी जुत्थी सु.श्री अरूण कु. जुत्थी कैलाश कॉ, दि.	1000/-

[illegible]

श्री प्रेम सागर जी दयानन्द नगर बहादुरगढ़ आटा 10 किलो
श्रीमती प्रिया श्री मनोचा रोहिणी दिल्ली 12 कॉपियां, 12 रजिस्टर,
5 पेन्सिल, 5 पैर, रबड 2 डिब्बे

फरिश्ता सॉफ्ट एण्ड चरखा कै. पंजाबी बाग, दिल्ली 200 रूपये, 2 पेट्टी सरफ
श्रीमती वेदवती पत्नी श्री नरेश कुमार सैनी नांगलौई दिल्ली 1 पैकेट टॉफी, 1 पेट्टी बिस्कुट
श्री दीपेन्द्र सुपुत्र श्री भूप सिंह डबास टीकरी दिल्ली 1 टीन सरसो तेल
पूरी ऑयल मील बहादुरगढ़ 1 टीन रिफान्ड तेल

श्री रवि कुमार जी आर्य अंजलि प्रोपर्टीज सैक्टर-6 बहादुरगढ़
। समय का विशिष्ट भोजन

श्री परमानन्द जी पाराशर आदर्श नगर । समय का विशिष्ट भोजन

श्री उमेश जी जिन्दल सोहना गुडगांव । समय का विशिष्ट भोजन

श्री जय भगवान जी जून गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
। समय का विशिष्ट भोजन

श्री बृजलाल जी सहगल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़
दूध, चाय, बिस्कुट, ब्रैड पकौड़े, 2 समय का नाश्ता

श्रीमती रोशनी देवी पत्नी श्री दया किशन काठमण्डी बहादुरगढ़,
। समय का विशिष्ट भोजन

श्रीमती वीरमति अध्यापिका सैक्टर-6, बहादुरगढ़
खीर का भोजन

पं. नत्थुराम गुरुनानक कॉलोनी, बहादुरगढ़ । समय विशिष्ट भोजन

श्रीमती सुमन अहलावत पश्चिम विहार दिल्ली । समय विशिष्ट भोजन

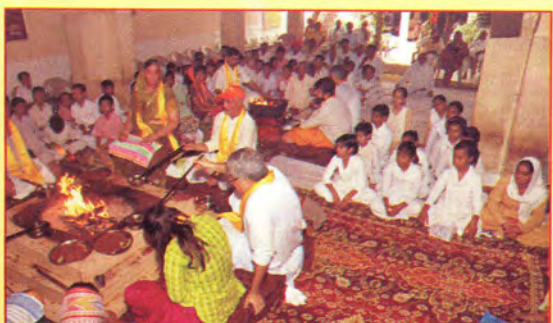
एम.एस.एम. पब्लिक स्कूल बामडौली, बहादुरगढ़

50 किलो आटा, 25 किलो चावल

श्री प्रदीप सिंह राणा बी.पी.ओ. घेवरा दिल्ली	33600/-
श्री अम्बरीश झाम (अपूर्व झाम) हैरीटेज सिटी गुडगांव	5000/-
श्री अजय कुमार सुनीता रानी टीकरी गुडगांव	3100/-
श्रीती प्रमिला देवी सांगवान सदर थाना, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती मीराबाई देवी जी कश्मीरी कॉलोनी बहादुरगढ़	1100/-
श्री वेद प्रकाश जी आर्य उत्तम नगर, दिल्ली	1000/-
श्रीमती निर्मला देवी गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़	1000/-
मा. रणवीर सिंह छिल्लर नेहरू पार्क बहादुरगढ़	500/-
श्री महेन्द्र प्रताप आर्य गुडगांव	500/-

आत्म-शुद्धि-पथ : आश्विन-कार्तिक 2073 : अक्टूबर 2016

आत्मशुद्धि आश्रम के 50वें स्थापना दिवस समारोह यज्ञ की सुन्दर झलकियां



आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

अक्टूबर 2016

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

आत्मशुद्धि आश्रम के 50वें स्थापना दिवस समारोह की सुन्दर झलकियां

